जिला शिक्षक संघ, दामुचक
मुजफ्फरपुर बिहार

# सुगम हिन्दी व्याकरण एंव रचना

स्व॰हरिवल्लभ नारायण सिंह
बी॰ए॰एस॰बी॰टी, प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित मध्य विद्यालय, पकड़ी इस्माईल

# सुगम हिन्दी व्याकरण

एवं

# रचना

हरिवल्लभ नारायण सिंह
बी० ए० एस० बी० टी०
प्रधानाध्यापक
उत्क्रमित मध्य विद्यालय, पकड़ी इस्माईल

पुस्तक मिलने का पता :—

जिला शिक्षक संघ, दामुचक

मुजफ्फरपुर

मूल्य ३-००

मूल्य 3-00

## समर्पण :—

परम पूज्य स्वर्गीय पिता श्री रामधुरत सिंह जी की पुण्य-स्मृति में सस्नेह सादर समर्पित ।

—हरिवल्लभ

# शिक्षकों से निवेदन

राष्ट्र के चप्पा-चप्पा में शिक्षा की स्वर्णिक ज्योत्स्ना बिखेर शिक्षा-जगत को आलोकित करनेवाले राष्ट्र के भावी कर्णधारों के उज्ज्वल भविष्य निर्माताओं के समक्ष अपनी लेखनी संचालन में मुझ सा अल्पज्ञ शिक्षक संकोच का अनुभव तो अवश्य ही करता है। क्योंकि न तो मैं अपने को हिन्दी का विद्वान मानता हूँ तथा न इसमें विद्वता का ही परिचय दिया है। किन्तु हिन्दी भाषा-भाषी होने के कारण उससे प्रेम तो अवश्य ही है। साथ ही अध्यापन सेवा में कार्यरत रहने के हेतु छात्रों की कठिनाइयों को सन्निकट से परखने का प्रयत्न तो अवश्य ही किया है। बच्चों की मेधा-शक्ति को उत्प्रेरित कर उनके बौद्धिक विकास को समुन्नत करने के दृष्टिकोण से अनुभवों एवं अल्प ज्ञानों को संगम का मूर्त्त रूप देकर प्रस्तुत पुस्तक आपके समक्ष विद्यमान किया है।

यह पुस्तक ४थे से ७वें वर्गों तक के शिक्षक-क्रमों को दृष्टि-गत रखते हुए लिखी गयी है। इसके संशोधन एवं परिमार्जन कार्य में परमादरणीय श्री सिपाही सिंह "श्रीमन्त" जिला शिक्षोपाधीक्षक महोदय ने जो अपना अमूल्य समय देकर मेरा मार्गदर्शन किया है, उसके लिए मैं उनका आजीवन आभारी रहूँगा। साथ ही ऐसे शिक्षकों एवं मित्रों के प्रति हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता; जिनके आग्रहों,

सुझावों एवं प्रोत्साहनों की उत्प्रेरणा स्वरूप प्रस्तुत पुस्तक सम्पन्न होकर आपके समक्ष मौजूद है। जिस तरह से उन्होंने अपना सहयोग देकर इसे सम्पन्न कराया है, भविष्य में भी उनसे इसी तरह का सहयोग अनवरत रूप से मिलता रहे; इसी का मैं कृपाकांक्षी हूँ।

व्याकरण जैसे गूढ़ विषय पर अनेकानेक बड़ी-बड़ी तथा छोटी सी छोटी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। फिर भी मैंने अपनी लेखनी चलाकर इस पुस्तक को आपलोगों के समक्ष प्रस्तुत किया है। इसमें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त १९५६ से १९६४ तक के मिड्ल छात्रवृत्ति के चुनाव एवं १९६५ से १९६९ तक के प्रारम्भिक बोर्ड परीक्षाओं में आये व्याकरण सम्बन्धी सभी प्रश्नों के समुचित उत्तरों का समावेश किया गया है। छात्र इसे सुगमतापूर्वक ग्राह्य कर सकें, इसलिये इसकी भाषा सरल, सरस एवं बोधगम्य रखी गयी है। व्याकरण की दृष्टि से यह पुस्तक उनके लिये थोड़ा सा भी उपयोगी सिद्ध हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूँगा। बड़ी कृपा होगी, यदि आप इसे अपने विद्यालयों में स्थान देकर छात्रों के सहायतार्थ उनके सन्निकट पहुँचवाने का कष्ट करेंगे तथा शिक्षक के नाते अपना सुझाव और समालोचक बनकर इसकी त्रुटियों की ओर मार्ग दर्शन कर मुझे कृतार्थ करेंगे। फलतः आगामी संस्करण में समुचित सुधार किया जा सके।

—हरिवल्लभ

# विषय-सूची :—


| | | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| १ | व्याकरण की परिभाषा | — | १ |
| २ | वर्ण विचार | — | १ |
| ३ | अक्षरों के उच्चारण स्थान | — | ३ |
| ४ | सन्धि | — | ४ |
| ५ | शब्द विचार | — | ८ |
| ६ | संज्ञा | — | १२ |
| ७ | पुरुष | — | १३ |
| ८ | लिंग | — | १४ |
| ९ | वचन | — | १८ |
| १० | कारक | — | १९ |
| ११ | कारक की रूपावलि | — | २१ |
| १२ | सर्वनाम | — | ३० |
| १३ | सर्वनामों की रूपावलि | — | ३१ |
| १४ | विशेषण | — | ३५ |
| १५ | क्रिया | — | ३७ |
| १६ | काल | — | ३९ |
| १७ | रूपावलि | — | ४२ |
| १८ | वाच्य | — | ४८ |
| १९ | अव्यय | — | ४९ |
| २० | क्रिया-विशेषण | — | ५१ |
| २१ | समास | — | ५२ |

| | | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | | — | ५६ |
| २२ | वाक्य प्रकरण | — | ५७ |
| २३ | वाक्यांग | — | ५७ |
| २४ | वाक्यांग विस्तार | — | ५८ |
| २५ | वाक्य भेद | — | ६० |
| २६ | उपसर्ग | — | ६२ |
| २७ | प्रत्यय | — | ६२ |
| २८ | तद्धित प्रत्यय | — | ६४ |
| २९ | कृदन्त | — | ६५ |
| ३० | पद-परिचय | — | ६६ |
| ३१ | चिन्ह विचार | — | ७० |
| ३२ | छन्द विचार | — | ७० |
| ३३ | अलंकार | — | ७३ |
| ३४ | कर्त्ता के ने चिन्ह का प्रयोग | — | ७४ |
| ३५ | वाक्य रचना के नियम | — | ७५ |
| ३६ | कुछ संयोजकों का प्रयोग | — | ७६ |
| ३७ | श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द | — | ७८ |
| ३८ | विपरीतार्थक शब्द | — | ७९ |
| ३९ | पर्यायवाची शब्द | — | ८० |
| ४० | अनेक शब्दों के लिए एक शब्द | — | ८२ |
| ४१ | मिडल छात्रवृत्ति परीक्षा का प्रश्नोत्तर | — | ८८ |
| ४२ | मिडल बोर्ड परीक्षा का प्रश्नोत्तर | — | |

# व्याकरण की परिभाषा

व्याकरण उस शास्त्र का नाम है जिसमें शब्दों के रूपों एवं प्रयोगों का वर्णन हो। उसके पढ़ने से शुद्ध-शुद्ध लिखने एवं बोलने का ज्ञान होता है।

व्याकरण के पाँच भाग होते हैं –

(१) वर्ण विचार (२) शब्द विचार (३) वाक्य विचार (४) चिह्न विचार (५) छन्द विचार

## अभ्यास

(१) व्याकरण किसे कहते हैं ?

(२) व्याकरण के कितने भाग होते हैं ?

## वर्ण विचार

वर्ण विचार :—जिसमें वर्णों अथवा अक्षरों के आकार, भेद, उच्चारण एवं उसके संयोग से बनने वाले शब्दों के नियम पर विचार किया जाता है, उसे हम वर्ण विचार कहते हैं।

वर्ण :—मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं। यह शब्द का वह भाग है, जिसका विभाग नहीं किया जा सकता। वर्ण का ही दूसरा नाम अक्षर है। जैसे—अ, इ, उ, क्, च्, ट्, प् आदि।

वर्णमाला :—वर्णों या अक्षरों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में मुख्यः ४४ वर्ण या अक्षर होते हैं।

अक्षर के भेद :—अक्षर के दो भेद होते हैं।

(१) स्वर (२) व्यंजन।

स्वर :—जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता से होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं। हिन्दी में इनकी संख्या ११ हैं यथा— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ एवं औ।

स्वर वर्ण के भेद:— किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसके आधार पर स्वर वर्ण के तीन भेद होते हैं।

[१] ह्रस्व स्वर [२] दीर्घ स्वर [३] प्लुत स्वर

('अ' के बोलने में जितना समय लगता है, उसे एक मात्रा का समय कहते हैं।)

ह्रस्व स्वर:—जिसके उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर कहते हैं जैसे- अ, इ, उ आदि।

दीर्घ स्वर:—जिसके उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दूना समय लगता है, उसे दीर्घ स्वर कहते हैं जैसे- आ, ई, ऊ इत्यादि।

प्लुत स्वर जिसके उच्चारण में ह्रस्व स्वर के उच्चारण से तिगुना समय लगता है, उसे प्लुत स्वर कहते हैं। जैसे—कु कुरु कू।

व्यंजन— जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्ण की सहायता से होता है, उसे व्यंजन वर्ण कहते हैं। जैसे—क, ख, ग, च छ, प, ट, थ आदि।

उपर्युक्त वर्णों का उच्चारण अ की सहायता से होता

है। अगर इन वर्णों में से अ को अलग कर दें तो उसका उच्चारण हम सही ढ़ग से नहीं कर सकते। हिन्दी में व्यंजनों की संख्या मुख्यतः ३३ हैं।

व्यंजन वर्ण के भेद—व्यंजन वर्ण के भी तीन भेद होते हैं।

(१) स्पर्श वर्ण (२) अन्तस्थ वर्ण (३) ऊष्म वर्ण।

स्पर्श वर्ण—स्पर्श वर्ण में क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग त वर्ग एवं प वर्ग अर्थात् क से लेकर म तक के वर्ण आते हैं।

अन्तस्थ वर्ण—अन्तस्थ वर्ण में य, र, ल एवं व वर्ण आते हैं।

उष्म वर्ण—ऊष्म वर्ण में श, ष, स एवं ह वर्ण आते हैं।

## अभ्यास

१ वर्ण किसे कहते हैं ?
२ वर्णमाला में कितने अक्षर होते हैं ?
३ अक्षर के कितने भेद होते हैं ?
४ स्वर वर्ण किसे कहते हैं ?
५ स्वर वर्ण के कितने भेद होते हैं ?
६ व्यंजन वर्ण किसे कहते हैं ?
७ व्यंजन वर्ण के कितने भेद होते हैं ?

## अक्षरों के उच्चारण स्थान

मुँह के जिस भाग की सहायता से जिस वर्ण का उच्चारण होता है, वही उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहलाता है। उच्चारण स्थान के अनुसार इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

| वर्णों का उच्चारण स्थान | वर्णों के नाम | आनेवाले वर्णों का नाम |
|---|---|---|
| कण्ठ — | कंठ्य — | अ, आ, क वर्ग, ह और विसर्ग |
| तालु — | तालव्य — | इ, ई, च वर्ग य और श |
| मुर्द्धा — | मुर्द्धण्य — | ऋ, ट वर्ग र और ष |
| दन्त — | दन्त्य — | त वर्ग, ल और स |
| ओठ — | ओष्ठ्य | उ, ऊ और प वर्ग |

कंठ और तालु —कंठतालव्य —ए और ऐ

कंठ और ओठ—कंठ ओष्ठ्य—ओ और औ

दन्त और ओठ —दन्त ओष्ठ्य—व

नासिका — सानु नासिक — अनुस्वार

## अभ्यास

(१) उच्चारण स्थान किसे कहते हैं ?

(२) नीचे लिखे वर्णों का उच्चारण स्थान बतलावें :—

क, च, ट, प, ज, थ, न, फ, ए, ओ और व

## सन्धि

वर्णों के मेल से जो विकार पैदा होता है, उसे संधि कहते हैं। जैसे—परम + अर्थ=परमार्थ। यहाँ हम देखते हैं कि परम में अन्तिम अक्षर 'अ' है (क्योंकि म् में 'अ' जोड़ने पर ही म बनता है।) तथा अर्थ में प्रथम अक्षर 'अ' है। अब हम प्रथम 'अ' तथा दूसरे 'अ' को मिला देते हैं तो अ + अ=आ बन जाता है। तत्पश्चात् 'म्' में आ जोड़ने से वह 'मा' हो जाता है। इस प्रकार परम+अर्थ=परमार्थ हो जाता है। इसी तरह के वर्णों के मेल को हम सन्धि कहते हैं।

# संधि के भेद

सन्धि के तीन भेद होते हैं।

(१) स्वर संधि (२) व्यंजन संधि (३) विसर्ग सधि।

स्वर सन्धि :—स्वर के साथ स्वर वर्णों के मेल को स्वर संधि कहते हैं। जैसे-पुस्तक+आलय = पुस्तकालय (अ+आ), महा+आत्मा = महात्मा (आ+आ) सदा+एव = सदैव = (आ+ए), पो+इत्र = पवित्र (ओ का अव् हो गया है।

व्यंजन सन्धि :—व्यंजन वर्ण के साथ स्वर अथवा व्यंजन वर्ण के मेल को व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे-जगत्+ईश= जगदीश, दिक्+अम्बर = दिगम्बर, उद्+घाटन = उद्घाटन, सत्+वाणी = सद्वाणी।

विसर्ग सन्धि:—विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल को विसर्ग संधि कहते हैं। जैसे- मनः+योग = मनोयोग, मनः+ज = मनोज, अधः+गति = अधोगति, निः+बल = निर्बल, निः+गुण = निर्गुण।

स्वर सन्धि के भेद —स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं।

(१) दीर्घ (२) गुण (३) वृद्धि (४) यण (५) अयादि।

दीर्घ :—ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आवे तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं इसी विकार को हम दीर्घ संधि कहते हैं। जैसे—परम+अर्थ = परमार्थ, देव+आलय = देवालय, विद्या+अर्थी=विद्यार्थी, विद्या+आलय = विद्यालय, गिरि+इन्द्र = गिरीन्द्र, कपि+ईश = कपीश, मही+इन्द्र=महीन्द्र मही+ईश्वर = महीश्वर, विधु+उदय = विधूदय, लघु+ऊर्मि = लघूर्मि, पितृ+ऋण = पितृण।

गुण :—अ अथवा आ के बाद ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ आवे तो अ, इ मिलकर ए, अ, उ मिलकर ओ तथा अ, ऋ= मिलकर अर् हो जाते हैं। जैसे—देव + इन्द्र = देवेन्द्र, महा+ इन्द्र:=महेन्द्र, अवध+ईश=अवधेश, महा + इन्द्र = महेन्द्र, ज्ञान+उदय = ज्ञानोदय, जल+ऊर्मि = जलोर्मि, गंगा+ऊर्मि =गंगोर्मि, देव+ऋषि=देवर्षि, महा+ऋषि = महर्षि।

वृद्धि :—अ अथवा आ के बाद ए, ऐ, ओ और औ आवे तो अ, ए या आ, ए अथवा अ, ऐ, या आ, ऐ मिलकर ऐ तथा अ, ओ या आ, ओ अथवा अ, औ या आ, औ मिलकर औ हो जाते हैं। जैसे:—एक+एक=एकैक, सदा+एव=सदैव, महा+औषधि=महौषधि, महा+ऐश्वर्य = महैश्वर्य।

यण :—इ, उ, ऋ के बाद ह्रस्व या दीर्घ कोई भिन्न स्वर आवे तो इ का य् उ का व् तथा ऋ का र् हो जाता है। जैसे- अभि+उक्ति=अभ्युक्ति, इति+आदि = इत्यादि, अनु+ऐषण =अन्वेषण, सु+आगत = स्वागत, पितृ+आदेश = पित्रादेश।

अयादि :—ए, ऐ, ओ और औ के बाद कोई स्वर आवे तो ए का अय, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् हो जाता है। जैसे—ने+अन = नयन, नै+अक = नायक, पो+इत्र = पवित्र, पौ+अक=पावक।

## व्यंजन सन्धि

यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण के बाद स्वर अथवा किसी वर्ग के तीसरे, चौथे एवं अन्तस्थ वर्ण आवे तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। जैसे—

वाक्+ईश = वागीश, जगत्+ईश=जगदीश, षट्+दर्शन= षड्दर्शन, अप्+ज=अब्ज, यदि त् या द् के बाद च या छ आवे तो त् या द् का च, ज या झ आवे तो ज्, ट या ठ आवे तो ट्, ड या ढ़ आवे तो ड् तथा ल आवे ल् हो जाता है। जैसे—

उत्+चारण —उच्चारण, सत्+चित्+आनन्द सच्चिदानन्द, विपद्+जाल विपज्जाल, तत्+टीका—तट्टीका, उत्+डयन— उड्डयन, उत्+लेख=उल्लेख।

यदि म् के बाद कोई व्यंजन वर्ण आवे तो म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे सम्+गम=संगम, सम्+गत=संगत।

किसी वर्ग के प्रथम अथवा तृतीय वर्ण के बाद कोई पंचम् वर्ण आवे तो प्रथम अथवा तृतीय वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का पंचम वर्ण बन जाता है। जैसे-जगत्+नाथ=जगन्नाथ, उत्+मत्त=उन्मत्त, वाक्+मय=वाङ्मय, षट्+मास=षण्मास

## विसर्ग सन्धि

यदि विसर्ग के पूर्व अ हो और उसके बाद भी अ हो तो प्रथम अ के स्थान पर ओ तथा द्वितीय अ के स्थान पर ऽ हो जाता है। जैसे--

यशः+अभिलाषी=यशोऽभिलाषी

मनः+अनुसार=मनोऽनुसार

यदि विसर्ग के पहले अ हो और उसके बाद किसी वर्ग का प्रथम, द्वितीय वर्ण और श, ष, स के अतिरिक्त कोई व्यंजन वर्ण आवे तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे--

| | |
|---|---|
| मनः+हर=मनोहर | मनः+ज=मनोज |
| पयः+द=पयोद | सरः+ज=सरोज |

अधः+गति=अधोगति, वयः+वृद्ध=वयोवृद्ध

यदि विसर्ग के आगे च, छ या श हो तो विसर्ग के स्थान पर श्, ट, ठ या ष हो तो ष् तथा त, थ या स हो तो स् हो जाते हैं। जैसे--

निः+छल=निश्छल निः+चल=निश्चल

धनुः+टंकार=धनुष्टंकार निः+तार=निस्तार

## अभ्यास

१ संधि किसे कहते हैं ?

२ संधि के कितने भेद होते हैं ? प्रत्येक की परिभाषा दीजिये।

३ स्वर संधि के कितने भेद हैं ? सोदाहरण बतावें।

४ संधि बिच्छेद कीजिये :--

नीरोग, पावन, तथैव, निराधार, एकैक, परीक्षार्थी, गिरीन्द्र, सच्चिदानन्द, सदाचार, सज्जन, मनोकामना, निश्चल, निष्फल।

## शब्द विचार

अक्षरों के मेल से जो ध्वनि उत्पन्न होता है, उसे शब्द कहते हैं। जैसे—राम, श्याम, काम आदि।

अर्थानुसार शब्द के भेद :—अर्थानुसार शब्द के दो भेद होते हैं। (१) निरर्थक शब्द (२) सार्थक शब्द

निरर्थक शब्द :—जिस शब्द का कुछ अर्थ नहीं होता, उसे निरर्थक शब्द कहते हैं। जैसे :— धक, चमक आदि।

सार्थक शब्द :—जिस शब्द का कुछ अर्थ होता है, उसे

सार्थक शब्द कहते हैं। जैसे— विनोद, खेल इत्यादि। विनोद कहने से यह स्पष्ट होता है कि विनोद किसी व्यक्ति का नाम है। विनोद शब्द से इसका अर्थ साफ-साफ जाहिर होता है। अतः इसे सार्थक शब्द कहते हैं।

## सार्थक शब्द के भेद

उमेश सुशील है, वह प्रतिदिन विद्यालय जाता है।

इस वाक्य पर दृष्टि डालने से मालूम पड़ता है कि उमेश किसी व्यक्ति का नाम है। सुशील उसके स्वभाव की विशेषता बतलाता है। वह शब्द उमेश के बदले में आया है। 'जाता है', उसके काम के बारे में सूचित करता है। प्रतिदिन का रुप सदा ज्यों का त्यों बना रहता है। इस प्रकार से सार्थक शब्द के पाँच भेद होते हैं।

(१) संज्ञा (२) सर्वनाम (३) विशेषण (४) क्रिया (५) अव्यय

## व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के भेद :—

व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के तीन भेद किये जाते हैं।

(१) रूढ़ि (२) यौगिक ३) योगरूढ़ि

रूढ़ि:—खण्ड करने पर जिस शब्द का कोई अर्थ नहीं निकलता, उसे रूढ़ि शब्द कहते हैं। जैसे—हाथी। हाथी शब्द का खण्ड करने पर हा + थी होगा। हा और थी दोनों हीं का अलग-अलग कोई अर्थ नहीं निकलता। अतः इसे रुढ़ि शब्द कहते हैं।

यौगिक:—खण्ड करने पर जिस शब्द के सभी खण्डों का

अर्थ निकलता है. उसे यौगिक शब्द कहते हैं । जैसे पाठशाला ।

पाठशाला शब्द का खण्ड करने पर पाठ+शाला होता है। दोनों खण्डों का अलग-अलग अर्थ निकालने पर पाठ का अर्थ होगा पढ़ाई तथा शाला का अर्थ होगा घर अर्थात् पढ़ाई का घर । अतः पाठशाला यौगिक शब्द है ।

योगरूढ़िः—जो शब्द अपने साधारण अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ जाहिर करता है, उसे योगरुढ़ि शब्द कहते हैं। जैसे- लम्बोदर । लम्बोदर का खण्ड करने पर लम्बा+उदर अर्थात् लम्बा पेट वाला शाब्दिक अर्थ होता है। लम्बा पेट वाला किसी भी व्यक्ति को लम्बोदर कह सकते हैं। किन्तु, लम्बोदर शब्द का प्रयोग गणेश जी के लिए ही विशेष अर्थ में होता है ! अतः लम्बोदर को योगरुढ़ि शब्द कहते हैं ।

विकाशानुसार शब्द के भेद : शब्द की उत्पत्ति के बाद उसमें क्रमिक विकास होता गया अतः इसके विकासानुसार शब्द को चार भागों में विभक्त किये जा सकते हैं।

(१) तत्सम (२) तद्भव (३) देशज (४) विदेशज

तत्सम : जिस संस्कृत के शब्दों का प्रयोग हिन्दी में ज्यों का त्यों होता है, उसे तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे- कवि, अश्रु, अनुज, देव आदि ।

तदभवः —जिस संस्कृत के शब्दों का व्यवहार हिन्दी में कुछ बदलकर किये जाते हैं, उसे तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे—आँसू, कपूर, कोयल, आम इत्यादि ।

देशज : हिन्दी को छोड़कर भारत की विभिन्न भाषाओं के शब्दों का व्यवहार हिन्दी में किया जाता है तो, उसे देशज शब्द कहते हैं। जैसे पगड़ी, खटमल आदि।

विदेशज :— विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हिन्दी में किया जाता है तो, उसे विदेशज शब्द कहते हैं। जैसे—मोटर, डाक्टर, स्टेशन, आदमी, जबाब, तारीख, हुक्म इत्यादि।

शब्द-शक्ति :—शब्द की तीन शक्तियाँ होती हैं।

(१) अभिधा (२) लक्षणा (३) व्यंजना

अभिधा :—जिस शब्द से साधारण अर्थ प्रगट होता है, उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं। इससे बने हुए शब्द वाचक शब्द कहलाते हैं। जैसे—आप महात्मा है। यहाँ महात्मा का साधारण अर्थ लिया गया है।

लक्षणा :—जिस शब्द का अर्थ लक्षण के आधार पर लिया जाता है, उसे लक्षण शब्द शक्ति कहते हैं तथा इससे बने हुए शब्द को लक्षण शब्द कहते हैं। जैसे—आप महात्मा के समान है। यहाँ पर महात्मा का अर्थ उसके लक्षण के आधार पर लिया गया है।

व्यंजना :—जिस शब्द से व्यंग्य का बोध होता है, उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते हैं। और इससे बने हुए शब्द व्यंजक शब्द कहलाते हैं। जैसे—हाँ हाँ, आप महात्मा हैं। यहाँ महात्मा का व्यवहार व्यंग्यार्थ रुप में किया गया है।

## अभ्यास

१. शब्द किसे कहते हैं तथा उसके कितने भेद होते हैं ?

१. सार्थक शब्द के कितने भेद हैं ?
२. विकासानुसार शब्द के कितने भेद होते हैं ? परिभाषा सहित उदाहरण दें।

## संज्ञा

संज्ञा : किसी वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे— गोपाल, हिमालय इत्यादि।

संज्ञा के भेद :—(१) गाय दूध देती है। (२) हिमालय भारत का प्रहरी है। (२) रमेश में अभी भी लड़कपन है। (४) सभा में प्रधान मंत्री के भाषण हुए। (५) दूध पीना स्वास्थ्यकर है।

उपर्युक्त प्रथम वाक्य में गाय शब्द का प्रयोग आया है। गाय से किसी खास गाय का बोध नहीं होता; बल्कि सभी प्रकार की गाय का बोध होता है। अतः जिस संज्ञा शब्द से जाति भर के नाम का बोध हो; उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

द्वितीय वाक्य में हिमालय शब्द के प्रयोग से यह जाहिर होता है कि यह एक विशेष पहाड़ का नाम है। क्योंकि सभी पहाड़ को हम हिमालय नहीं कह सकते। अस्तु: जिस संज्ञा शब्द से किसी खास वस्तु के नाम का बोध हो, उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं।

तृतीय वाक्य में लड़कपन शब्द के प्रयोग से रमेश के स्वभाव का परिचय मिलता है। अर्थात् उसके बड़ा होने पर भी उसमें अभी लड़कपन का गुण मौजूद हैं। इसलिए जिस संज्ञा शब्द से किसी वस्तु के गुण, स्वभाव एवं व्यापार का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

चौथे वाक्य में सभा शब्द का व्यवहार किया गया है। यह बात स्पष्ट है कि सभा में बहुत से लोग जमा होते हैं। अतः इस वाक्य से साफ-साफ जाहिर होता है कि लोग सभा में इकट्ठे हुए और उन्हीं के बीच प्रधान मंत्री ने भाषण किया। अस्तु जिस संज्ञा शब्द से समूह, झूंड एवं गुच्छा आदि का बोध होता है, उसे समूह वाचक संज्ञा कहते हैं।

पाँचवें वाक्य में दूध शब्द का प्रयोग किया गया है। दूध ऐसा पदार्थ है, जिसे हम नाप सकते हैं। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जिस वस्तु को नापा या तौला जाये, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

अन्त में उपर्युक्त विवेचनों के आधार पर हम इस निर्णय पर पहुँचते हैं कि संज्ञा के पाँच भेद हैं।

(१) जातिवाचक संज्ञा (२) व्यक्तिवाचक संज्ञा (३) भाववाचक संज्ञा (४) समूहवाचक सज्ञा (५) द्रव्यवाचक संज्ञा।

अभ्यास

१ संज्ञा के भेदों की परिभाषा कीजिये।
२ अपनी याद से संज्ञा के भेदों का तीन उदाहरण दें।
३ संज्ञा की क्या परिभाषा है?

# पुरुष

पुरुष के तीन भेद होते हैं।

(१) उत्तम पुरुष (२) मध्यम पुरुष (३) अन्य पुरुष।

उत्तम पुरुष :--जो बात करे, उसे उत्तम पुरुष कहते हैं जैसे—मैं, हम, हमलोग।

मध्यम पुरुष :--जिससे कुछ कहा जाये, उसे मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे--तू, हम, तुमलोग।

अन्य पुरुष --जिसके विषय में कुछ कहा जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं। जैसे—वह, वे, वे लोग।

अभ्यास

१ पुरुष के कितने भेद होते हैं ? सोदाहरण बतावें।

२ पुरुष के भेदों की परिभाषा करें।

संज्ञा का रुपान्तर

अव्यय को छोड़कर शेष सभी शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) का रूप सदा बदलता रहता है। ऐसे ही बदलते हुए संज्ञा के रूप को उसका रुपान्तर कहते हैं। मुख्य रूप से संज्ञा के तीन रुपान्तर होते हैं।

(१) लिंग (२) वचन (३) कारक

अब हमलोग उपर्युक्त संज्ञा के रुपान्तर पर विचार करेंगे।

अभ्यास

१ संज्ञा के मुख्य कितने रुपान्तर होते हैं और कौन-कौन ?

लिंग

मदन आम खाता है। रानी आम खाती है। अमर पाठशाला जाता है। नीला पाठशाला जाती है।

इन वाक्यों को देखने से मालूम पड़ता है कि मदन और अमर से पुरुष जाति का तथा रानी और नीला से स्त्री जाति का बोध होता है। क्योंकि मदन और अमर के लिए क्रिया का

प्रयोग क्रमशः 'खाता है और जाता है' किया गया है। उसी तरह से रानी और नीला के लिए क्रिया का प्रयोग क्रमशः 'खाती है और जाती है' किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जिससे पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

हिन्दी में लिंग के दो भेद होते हैं।

(१) पुल्लिंग (२) स्त्रीलिंग

पुलिंग :- जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिग कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में मदन एवं अमर का प्रयोग पुरुष जाति के लिए किया गया है। अतः मदन और अमर को हमलोग पुँल्लिग कहेंगे।

स्त्रीलिंग :—जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

ऊपर के वाक्यों में रानी और नीला का प्रयोग स्त्री जाति के लिए किया गया है। अतः रानी और नीला स्त्रीलिंग है।

जिन जीवधारियों के जोड़े होते हैं, उनके लिंग समझने में कठिनाई नहीं होती। किन्तु, जिनके जोड़े नहीं होते तथा निर्जीव वस्तुओं के लिंग निर्णय में कठिनाई होती है। अतः लिंग निर्णय के कुछ नियम नीचे लिखे जाते हैं। इसे भलि-भाँति समझ लेना चाहिये।

(१) जिन भाववाचक सज्ञाओं के अन्त में पन, पा, त्व, य, ना एवं आव हो, वैसे शब्द प्रायः पुँल्लिग होते हैं। जैसे—

लड़कपन, सौन्दर्य, बीरत्व, चढ़ाव, मनपन, बुढ़ापा इत्यादि।

(२) हिन्दी के आकारान्त संज्ञाएँ प्रायः पुँल्लिग होती है। जैसे--जूता, छाता, कपड़ा, अच्छा, काला इत्यादि।

(३) तारों एवं नक्षत्रों के नाम प्रायः पुल्लिग होते हैं। जैसे--शनि, बुध, मंगल, शुक्र आदि।

(४) पहाड़ों के नाम प्रायः पुल्लिग होते हैं। जैसे--हिमालय, विन्ध्याचल आदि।

(५) रत्नों के नाम प्रायः पुँल्लिग होते हैं। जैसे--सोना, हीरा, मोती, जवाहर आदि।

(६) अनाजों के नाम प्रायः पुँल्लिग होते हैं। जैसे--चावल, गेहूँ, जौ, बादाम आदि।

(७) तत्सम के अकारान्त शब्द प्रायः पुँल्लिग होते हैं। जैसे--अनुज, देव, अध्याय, उपहार, अभिप्राय आदि।

(८) इकारान्त तथा ईकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे--गति, मति, बुद्धि, भक्ति, तिथि, नदी, चिट्ठी, चीनी, सखी आदि।

अपवाद- घी, दही, मोती, मही और पानी।

(९) जिन भाववाचक संज्ञाओं के अन्त में आई, ता, वट, हट हो, वैसे शब्द प्राय. स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे- चढ़ाई, शत्रुता, मित्रता, बनावट, चिल्लाहट आदि।

(१०) जिन संज्ञाओं के अन्त में आ, उ हो वे प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे - माता, दया, कृपा, करुणा, रेणु, मृत्यु, आयु आदि।

अपवाद—पिता, छाता, भ्राता, साधु आदि ।

११ जिन संज्ञाओं के अन्त में इया, ऊ हो वे प्राय स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—दुनिया, चिड़िया, खटिया, दारु, लू, आदि ।

अपवाद—पहिया, भालू, आलू, बालू आदि ।

१२ नदियों एवं तिथियों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे – गंगा, युमुना, सरस्वती, नर्मदा, दूज, तीज, चौथ आदि।

अपवाद - सिन्धु, ब्रह्मपुत्र, सोन, सरयू आदि ।

१३ खकारान्त तथा तकारान्त संज्ञा के शब्द प्राय स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे—आँख काँख, भूख, भीख, बात, लात, मिहनत आदि ।

अपवाद – नख, पाँख, अमृत, भात, गात, आदि ।

## लिंग परिवर्त्तन के नियम

(१) अकारान्त शब्द को ईकारान्त में परिवर्त्तन कर देने से वह स्त्रीलिंग हो जाता है। जैसे—पहाड़-पहाड़ी, कुमार-कुमारी, नर-नारी आदि ।

(२) आकारान्त शब्द को ईकारान्त में बदल देने पर वह स्त्रीलिंग बन जाता है। जैसे—लड़का-लड़की घोड़ा-घोड़ी' अच्छा-अच्छी' काला-काली' पिला-पीली, हरा-हरी आदि ।

## अभ्यास

(१) निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय वाक्य में प्रयोग द्वारा करें :—

कोशिश, मोती, भारत, मजहब, गुण, माधुर्य, महात्मा, ऊँचाई, माया और आशा।

## वचन

जिन शब्दों से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया आदि की संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। हिन्दी में दो प्रकार के वचन होते हैं।

[१] एकवचन [२] बहुवचन

गाय चरती है। घोड़ा आता है।

ऊपर के वाक्यों को देखने से ज्ञात होता है कि गाय एवं घोड़ा संज्ञा तथा 'चरती है' एवं 'आता है' क्रिया है। गाय एवं घोड़ा से एक गाय एवं एक घोड़ा का बोध होता है। 'चरती है' तथा आता है' से भी एक गाय के चरने का तथा एक घोड़ा के आने का बोध होता है। अतः हम देखते हैं कि गाय एवं घोड़ा एकवचन है। इसी वजह से क्रिया का भी प्रयोग उसी के अनुरुप एकवचन में किया गया है। अस्तु, हम कह सकते हैं कि जिस सार्थक शब्द से एक सख्या का बोध होता है, उसे एकवचन कहते हैं।

गायें चरती हैं। घोड़े आते हैं।

इन वाक्यों को देखने से पता चलता है कि अनेक गायें चरती हैं तथा कई घोड़े आते हैं। क्योंकि क्रिया का भी प्रयोग उसी के अनुसार बहुवचन में किया गया है। अतः जिस सार्थक शब्द से एक से अधिक संख्या का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

उदाहरण

| | | |
|---|---|---|
| एकवचन | — | बहुवचन |
| बहन | — | बहनों, बहनें |
| लड़का | — | लड़के |
| तिथि | — | तिथियाँ |
| भाई | — | भाइयों |
| नदी | — | नदियाँ |
| छात्र | — | छात्रों, छात्रगण |

अभ्यास

१ नीति, शिक्षक, राजा, बैल एवं पुस्तक शब्द का बहुवचन बनाकर वाक्य में प्रयोग करें।

## कारक

क्रिया के साथ अपना संबंध बतलाने वाले संज्ञा या सर्वनाम के रूप को कारक कहते हैं। अथवा क्रिया की उत्पति में जो सहायक हो, उसे कारक कहते हैं।

शैलेन्द्र पुस्तक पढ़ता है।

इस वाक्य में 'पढ़ता है, क्रिया है। इसका सबंध शैलेन्द्र एवं पुस्तक दोनों से है। क्योंकि प्रश्न उठता है। कौन पढ़ता है? शैलेन्द्र। किसे पढ़ता है? पुस्तक को। इससे स्पष्ट जाहिर होता है कि क्रिया का संबध शैलेन्द्र एवं पुस्तक दोनों से है। अब प्रश्न उठता है कि शैलेन्द्र और पुस्तक में संबंध है या नहीं? इसका सीधा उत्तर मिलता है कि दोनों में संबंध

है। क्योंकि शैलेन्द्र क्या पढ़ता है ? पुस्तक। अतः हम कह सकते हैं कि वाक्य में आये हुए शब्द एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं तथा उनका सम्बन्ध बतलाना कारक का काम है।

हे राम। तूने सुग्रीव की भलाई के लिए तरकस से बाण निकालकर अंगद के पिता बालि को पहाड़ पर जाकर बाण से मारा।

इस वाक्य में क्रिया की उत्पत्ति में अनेक प्रकार से सहायक हैं। जिसे निम्न रुप में स्पष्ट करते हैं।

१ काम कौन करता है ?—तूने अर्थात् राम ने।
२ काम का फल किस पर पड़ता है ? बालि पर।
३ काम किसके द्वारा हुआ ?—बाण के द्वारा।
४ काम किसके लिए किया गया ?—सुग्रीव के लिए।
५ बाण कहाँ से निकाला गया ? तरकस से।
६ बालि का संबंध किससे था ?—अगद से।
७ काम कहाँ हुआ ?—पहाड़ पर।
८ किसे सम्बोधन किया गया है ?—राम को।

अतः इन विवेचनों के आधार पर कारक को आठ भागों में विभक्त किया जा सकता है। कर्त्ता, कर्म करण, सम्प्रदान आपादान, सम्बन्ध अधिकरण और सम्बोधन।

कर्त्ता :—काम करने वाले को कर्त्ता कारक कहते हैं जैसे-तूने

कर्म :—काम का फल जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। जैसे-बालि को।

करण :—जिसके द्वारा काम किया जाता है, उसे करण कारक कहते हैं। जैसे—बाण से।

सम्प्रदान :—जिसके लिए काम किया जाता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे सुग्रीव के लिए।

आपादान :—जिससे जुदाई का बोध होता है, उसे आपादान कारक कहते हैं। जैसे—तरकस से।

सम्बन्ध :—जिससे संबंध सूचित होता हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। जैसे—अंगद के पिता।

अधिकरण :—जहाँ पर काम होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे—पहाड़ पर।

सम्बोधन :—जिससे पुकारा जाता है या ध्यान आकर्षित कराया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। जैसे—हे राम!

## कारक के चिन्ह

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | — | ने, शून्य |
| कर्म | — | को, शून्य |
| करण | — | से, द्वारा |
| सम्प्रदान | — | को, के लिए |
| आपादान | — | से (जहाँ जुदाई का ज्ञान हो) |
| सम्बन्ध | — | का, के, की, रा, रे, री |
| अधिकरण | — | में, पै, पर |
| सम्बोधन | — | हे, हो अरे आदि। |

## कारक का रूप

### बालक शब्द (पुँलिंग)

| | एकवचन | | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| कर्त्ता | — बालक, बालक ने | — | बालक, बालकों ने |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्म | -- बालक को | -- बालको को |
| करण | -- बालक से | -- बालकों से |
| सम्प्रदान | -- बालक के लिए | -- बालकों के लिए |
| आपादान | -- बालक से | -- बालकों से |
| सम्बन्ध | -- बालक का, के, की | -- बालकों का, के की |
| अधिकरण | -- बालक में, पै पर | -- बालकों में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे बालक | -- हे बालकों। |

## राजा-शब्द (पुंलिग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- राजा, राजा ने | -- राजा, राजाओं ने |
| कर्म | -- राजा को | -- राजाओं को |
| करण | -- राजा से | -- राजाओं से |
| सम्प्रदान | -- राजा के लिए | -- राजाओं के लिए |
| आपादान | -- राजा से | -- राजाओ से |
| सम्बन्ध | -- राजा का, के, की | -- राजाओ का, के, की |
| अधिकरण | -- राजा में, पै, पर | -- राजाओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे राजा | -- हे राजाओ। |

## कवि-शब्द (पुंलिग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- कवि, कवि ने | -- कवि, कवियो ने |
| कर्म | -- कवि को | -- कवियों को |
| करण | -- कवि से | -- कवियो से |
| सम्प्रदान | -- कवि के लिए | -- कवियों के लिए |

| | एकवचन | | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| आपादान | -- कवि से | -- | कवियों से |
| सम्बन्ध | -- कवि का, के, की | -- | कवियों का, के की |
| अधिकरण | -- कवि में, पै, पर | -- | कवियों में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे कवि | -- | हे कवियों । |

## माली-शब्द (पुंलिंग)

| | | | |
|---|---|---|---|
| कर्त्ता | -- माली, माली ने | -- | माली, मालियों ने |
| कर्म | -- माली को | -- | मालियों को |
| करण | -- माली से | -- | मालियों से |
| सम्प्रदान | -- माली के लिए | -- | मालियों के लिए |
| आपादान | -- माली से | -- | मालियों से |
| सम्बन्ध | -- माली का, के, की | -- | मालियों का, के, की |
| अधिकरण | -- माली में, पैं, पर | - | मालियों में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे माली | - | हे मालियों |

## साधु-शब्द (पुंलिंग)

| | | | |
|---|---|---|---|
| कर्त्ता | -- साधु, साधु ने | -- | साधु, साधुओं ने |
| कर्म | -- साधु को | -- | साधुओं को |
| करण | -- साधु से | - | साधुओं से |
| सम्प्रदान | -- साधु के लिए | — | साधुओं के लिए |
| आपादान | -- साधु से | -- | साधुओं से |
| सम्बन्ध | -- साधु का, के, की | -- | साधु का, के, की |
| अधिकरण | -- साधु में, पै, पर | -- | साधुओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे साधु | — | हे साधुओं । |

## डाकू-शब्द (पुंलिंग)

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- डाकू, डाकू ने | -- डाकू, डाकुओं ने |
| कर्म | -- डाकू, को | -- डाकुओं को |
| करण | -- डाकू से | -- डाकुओं से |
| सम्प्रदान | -- डाकू के लिए | -- डाकुओ के लिए |
| आपादान | -- डाकू से | -- डाकुओ से |
| सम्बन्ध | -- डाकू का, के, की | -- डाकुओं का, के, की |
| अधिकरण | -- डाकू में, पै, पर | -- डाकुओ में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे डाकू | -- डाकुओं |

## पांडे-शब्द (पुंलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- पांडे, पांडे ने | -- पांडे, पांडेओ ने |
| कर्म | -- पांडे को | -- पांडेओं को |
| करण | -- पांडे से | -- पांडेओं से |
| सम्प्रदान | -- पांडे के लिए | -- पांडेओं के लिए |
| आपादान | -- पांडे से | -- पांडेओं से |
| सम्बन्ध | -- पांडे का, के, की | -- पांडेओं का, के, की |
| अधिकरण | -- पांडेमें, पै, पर | -- पांडेओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे पांडे | -- हे पांडेओं। |

## बरैं-शब्द (पुंलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- बरैं, बरैं ने | -- बरैं, बरैंओं ने |
| कर्म | -- बरैं को | -- बरैंओं को |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| करण | -- बरैं से | बरैंओं से |
| सम्प्रदान | -- बरैं के लिए | -- बरैंओं के लिए |
| आपादान | -- बरैं से | -- बरैंओं से |
| सम्बन्ध | -- बरैं का, के, की | -- बरैंओं का, के, की |
| अधिकरण | -- बरैं में, पै, पर | -- बरैंओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे बरैं | -- हे बरैंओं। |

कोदो-शब्द (पुंलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- कोदो, कोदो ने | -- कोदो, कोदोओं ने |
| कर्म | -- कोदो को | -- कोदोओं को |
| करण | -- कोदो से | -- कोदोओं से |
| सम्प्रदान | -- कोदो के लिए | -- कोदोओं के लिए |
| आपादान | -- कोदो से | -- कोदोओं से |
| सम्बन्ध | -- कोदो का, के, की | -- कोदोओं का, के, की |
| अधिकरण | -- कोदो में, पै, पर | -- कोदोओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे कोदो | -- हे कोदोओं। |

जौ-शब्द (पुंलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- जौ, जौ ने | -- जौ, जौओं ने |
| कर्म | -- जौ को | -- जौओं को |
| करण | -- जौ से | -- जौओं से |
| सम्प्रदान | -- जौ के लिए | -- जौओं के लिए |
| आपादान | -- जौ से | -- जौओं से |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| सम्बन्ध | -- जौ का, के, की | -- जौओं का, के, की |
| अधिकरण | -- जौ में, पै, पर | -- जौओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे जौ | -- हे जौओं |

बहन-शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- बहन, बहन ने | -- बहनें, बहनों ने |
| कर्म | -- बहन को | -- बहनों को |
| करण | -- बहन से | -- बहनों से |
| सम्प्रदान | -- बहन के लिए | -- बहनों के लिए |
| आपादान | -- बहन से | -- बहनों से |
| सम्बन्ध | -- बहन का, के, की | -- बहनों का, के, की |
| अधिकरण | -- बहन में, पै, पर | -- बहनों में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे बहन | -- हे बहनों |

बालिका-शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | --बालिका, बालिका ने | --बालिकायें, बालिकाओं ने |
| कर्म | --बालिका को | --बालिकाओं को |
| करण | --बालिका से | --बालिकाओं से |
| सम्प्रदान | --बालिका के लिए | --बालिकाओं के लिए |
| आपादान | --बालिका से | --बालिकाओं से |
| सम्बन्ध | --बालिका का, के, की | --बालिकाओं का, के, की |
| अधिकरण | --बालिका में, पै, पर | --बालिकाओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे बालिका | --हे बालिकाओं |

## नीति शब्द (स्त्रीलिंग)

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता -- | नीति, नीति ने | --नीतियाँ, नीतियों ने |
| कर्म -- | नीति को | - नीतियों को |
| करण -- | नीति से | --नीतियों से |
| सम्प्रदान -- | नीति के लिए | --नीतियों के लिए |
| आपादान -- | नीति से | --नीति से |
| सम्बन्ध -- | नीति का, के की | --नीतियों का, के की |
| अधिकरण-- | नीति में, पै, पर | --नीतियों में, पै, पर |
| सम्बोधन -- | हे नीति | --हे नीतियों |

## देवी शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता -- | देवी, देवी ने | --देवियाँ, देवियों ने |
| कर्म -- | देवी को | --देवियों को |
| करण -- | देवी से | --देवियों से |
| सम्प्रदान -- | देवी के लिए | --देवियों के लिए |
| आपादान -- | देवी से | --देवियों से |
| सम्बन्ध -- | देवी का, के, की | --देवियों का, के, की |
| अधिकरण-- | देवी में, पै, पर | --देवियों में, पै, पर |
| सम्बोधन -- | हे देवी | --देवियों |

## धेनु शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता -- | धेनु, धेनु ने | --धेनुएँ, धेनुओं ने |
| कर्म -- | धेनु को | --धेनुओं को |
| करण -- | धेनु से | --धेनुओं से |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| सम्प्रदान -- | धेनु के लिए | --धेनुओं के लिए |
| आपादान -- | धेनु से | --धेनुओं से |
| सम्बन्ध -- | धेनु का, के, की | --धेनुओ का, के, की |
| अधिकरण-- | धेनु में, पै, पर | --धेनुओं में, पै, पर |
| सम्बोधन -- | हे धेनु | --हे धेनुओं |

बहू शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता -- | बहू, बहू ने | --बहुएँ, बहुओं ने |
| कर्म -- | बहू को | -- बहुओं को |
| करण -- | बहू से | --बहुओं से |
| सम्प्रदान -- | बहु के लिए | --बहुओं के लिए |
| आपादान | बहू से | --बहुओ से |
| सम्बन्ध - | बहू का, के, की | --बहुओं का, के, की |
| अधिकरण-- | बहू में, पै, पर | --बहुओं में, पै, पर |
| सम्बोधन -- | हे बहू | --बहुओं |

हरैं शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता -,, | हरैं, हरैं ने | --हरैंएँ, हरैंओ ने |
| कर्म -- | हरैं को | - हरैंओं को |
| करण -- | हरैं से | --हरैंओं से |
| सम्प्रदान -- | हरैं के लिए | --हरैंओ के लिए |
| आपादान -- | हरैं से | --हरैंओं से |
| सम्बन्ध -- | हरैं का, के, की | --हरैंओ का, के की |
| अधिकरण-- | हरैं में, पै, पर | --हरैंओं में, पै, पर |
| सम्बोधन -- | हे हरैं | --हे हरैंओं । |

## जै शब्द (स्त्रीलिंग)

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता -- | जै जै ने | --जैएँ जैओं ने |
| कर्म - | जै को | --जैओं को |
| करण — | जै से | --जैओं से |
| सम्प्रदान -- | जै के लिए | --जैओं के लिए |
| आपादान -- | जै से | --जैओं से |
| सम्बन्ध -- | जै का, के की | -जैओं का, के की |
| अधिकरण -- | जै में, पै, पर | --जैओं में, पै, पर |
| सम्बोधन - | हे जै | --हे जैओं। |

## सरसो शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | --सरसो, सरसो ने | --सरसोए, सरसोओं ने |
| कर्म -- | सरसो को | --सरसोओं को |
| करण -- | सरसो से | —सरसोओं से |
| सम्प्रदान -- | सरसो के लिए | --सरसोओं के लिए |
| आपादान -- | सरसो से | -सरसोओं से |
| सम्बन्ध -- | सरसो का, के की | -सरसोओं का, के की |
| अधिकरण-- | सरसो में, पै, पर | -सरसोओं में, पै, पर |
| सम्बोधन -- | हे सरसो | --हे सरसोओं। |

## गौ शब्द (स्त्रीलिंग)

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता -- | गौ, गौ ने | --गौए गौओं ने |
| कर्म -- | गौ को | --गौओं को |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| करण | -- गौ से | --गौओं से |
| सम्प्रदान | — गौ के लिए | --गौओं के लिए |
| अपादान | -- गौ से | -- गौओं से |
| सम्बन्ध | - गौ का, के की | - गौओं का, के, की |
| अधिकरण | -- गौ में, पै, पर | --गौओं में, पै, पर |
| सम्बोधन | -- हे गौ | --हे गौओं। |

अभ्यास

१ कारक किसे कहते हैं ?
२ कारक के कितने भेद होते हैं ? सोदाहरण बतावें।
३ एक ऐसा वाक्य बनावें, जिसमें सभी कारक हों।
४ बात, शत्रु, लड़का एवं योगी शब्द का रुप लिखें।

# सर्वनाम

सर्वनाम की परिभाषा के सम्बन्ध में पहले ही समझ चुके हैं। अब हमलोग सर्वनाम के भेदों पर विचार करेंगे। सर्वनाम के मुख्यतः छः भेद हैं।

(१) पुरुषवाचक (२) निश्चयवाचक (३) अनिश्चयवाचक
(४ सम्बन्धवाचक (५) निजवाचक (६) प्रश्नवाचक

(१) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं।

(क) उत्तम पुरुष :-- बोलनेवाले को उत्तमपुरुष कहते है। जैसे— मैं, हम, मुझे, हमें आदि।

(ख) मध्यम पुरुष :-- सुननेवाले को मध्यपुरुष कहते हैं। जैसे--तू, तुम, तुमलोग।

(ग) अन्यपुरुष :—जिसके सम्बन्ध में बातें की जाये, उसे अन्य पुरुष कहते हैं।
जैसे—वह, वे, वे लोग, उन्हें, उन्होंने आदि।

२ निश्चयवाचक :—जिस सर्वनाम से निश्चय का बोध हो, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे—यह मेरी कलम है।

३ अनिश्चयवाचक :—जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—कोई पुस्तक लाओ।

४ सम्बन्धवाचक :—संज्ञा के सम्बन्ध को जाहिर करनेवाले को सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—जो भगवान का भजन करेगा वह उन्हें प्राप्त करेगा।

५ निजवाचक :—जो शब्द निज का बोध कराता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे हम, तुम खाते हैं।

६ प्रश्नवाचक —जिससे प्रश्न का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे—कौन आता है ?

अभ्यास

(१) सर्वनाम किसे कहते हैं ?
(२) सर्वनाम के कितने भेद हैं ?
(३) सर्वनाम के भेदों की परिभाषा सोदाहरण दें।

# सर्वनाम के रूप

उत्तम-पुरुष—मैं

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | मैं, मैंने | हम, हमने |

| | एकवचन | | बहुवचन |
|---|---|---|---|
| कर्म | -- मुझको, मुझे | -- | हमको, हमे |
| करण | -- मुझसे | -- | हम से |
| सम्प्रदान | -- मेरे लिए | -- | हमारे लिए |
| आपादान | -- मुझसे | -- | हमसे |
| सम्बन्ध | -- मेरा, मेरी, मेरी | -- | हमारा, हमारी हमारे |
| अधिकरण | -- मुझसे, मुझपर | -- | हममें, हमपर |

मध्यम-पुरुष—तू

| | | | |
|---|---|---|---|
| कर्त्ता | -- तू, तूने | -- | तुम, तुमने |
| कर्म | -- तुझको, तुझे | -- | तुमको, तुम्हे |
| करण | -- तुझसे | -- | तुमसे |
| सम्प्रदान | -- तेरे लिए | -- | तुम्हारे लिए |
| आपादान | -- तुझसे | -- | तुमसे |
| सम्बन्ध | -- तेरा तेरी, तेरे | -- | तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे |
| अधिकरण | -- तुझ में | -- | तुममें। |

अन्य-पुरुष—वह

| | | | |
|---|---|---|---|
| कर्त्ता | -- वह | -- | वे, उनने, उन्हो ने |
| कर्म | -- उसको, उसे | -- | उनको, उन्हें |
| करण | -- उससे | -- | उनसे |
| सम्प्रदान | -- उसके लिए | -- | उनके लिए |
| आपादान | -- उससे | -- | उनसे |
| सम्बन्ध | -- उसका, उसकी, उसके | -- | उसका, उनकी, उनके |
| अधिकरण | -- उसमें | -- | उनमें। |

## निजवाचक—आप

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| कर्त्ता | — आप, आपने | — आपलोग, आपलोगों ने |
| कर्म | — आपको | - आपलोगों को |
| करण | — आपसे | - आपलोगों से |
| सम्प्रदान | — आपके लिए | —आपलोगों के लिए |
| आपादान | — आपसे | - आपलोगों से |
| सम्बन्ध | — आपका, आपकी, आपके | -आपलोगों का आपलोगों की, आपलोगों के |
| अधिकरण | — आप में | - आपलोगों में। |

## प्रश्नवाचक—कौन

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | — कौन, किसने | --किनने, किन्होंने |
| कर्म | — किसको, किसे | --किनको, किन्हें |
| करण | — किससे | —किनसे |
| सम्प्रदान | — किसके लिए | --किनके लिए |
| आपादान | — किससे | —किनसे |
| सम्बन्ध | — किसका, किसकी किसके | --किनका, किनकी, किनके |
| अधिकरण | -- किसमें | --किनमें। |

## निश्चयवाचक—यह

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- यह, इसने | —ये, इनने, इन्होंने |
| कर्म | -- इसको, इसे | --इनको, इन्हें |
| करण | -- इससे | --इनसे |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| सम्प्रदान | -- इसके लिए, इसको | —इनके लिए, इनको, इन्हें |
| आपादान | -- इससे | --इनसे |
| सम्बन्ध | --इसका, इसकी, इसके | -इनका, इनकी, इनके |
| अधिकरण | -- इसमें, इस पर | --इनमें, इनपर। |

## सम्बन्धवाचक—जो

| | | |
|---|---|---|
| कर्त्ता | -- जो, जिसने | --जिनने, जिन्होंने |
| कर्म | - जिसको, जिसे | —जिनको, जिन्हें |
| करण | -- जिससे | --जिनसे |
| सम्प्रदान | — जिसके लिए, जिसे | —जिनके लिए, जिसे |
| आपादान | -- जिससे | --जिनसे |
| सम्बन्ध | --जिसका, जिसकी, जिसके | --जिनका, जिनकी, जिनके |
| अधिकरण | -- जिसमें, जिसपर | --जिनमें, जिनपर |

## अनिश्चयवाचक—कोई

| | |
|---|---|
| कर्त्ता | - कोई, किसी ने |
| कर्म | - किसी को |
| करण | --किसी से |
| सम्प्रदान | किसी को, किसी के लिए |
| आपादान | —किसी से |
| सम्बन्ध | --किसी का |
| अधिकरण | --किसी में, किसी पर। |

## अभ्यास

१ इनसे वाक्य बनावें।

जिसका, किन्हें, इनसे, तेरा, तुम्हारे

२ इनका रुप लिखें —

(क कौन, यह, तू शब्द का सम्बन्ध और अधिकरण में
(ख) आप, जो, मैं शब्द का कर्म और सम्प्रदान में
(ग) वह, जो, कोई शब्द का कर्त्ता और करण में

## विशेषण

विशेषण की परिभाषा हमलोग पहले ही समझ चुके हैं। नीचे हमलोग विशेषण के भेदों के विषय में अध्ययन करेंगे।

विशेषण के मुख्य तीन भेद होते हैं :—

(१) गुणवाचक (२) संख्यावाचक (३) सार्वनामिक।

(क) गुणवाचक :—जिस शब्द से विशेषण के गुण का बोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - फूल सुन्दर है। लाल घोड़ा आता है।

(ख) संख्यावाचक :— जो विशेषण संख्या का ज्ञान कराता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे — वह दूसरे दिन आया। राम वर्ग में प्रथम आया।

(ग) सार्वनामिक :—जो सर्वनाम विशेषण का कार्य करता है, उसे सर्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे :— यह घर मेरा है। वह श्याम की गाय है।

## विशेषण का रुपान्तर

विशेष्य के अनुसार ही विशेषण का भी लिंग, वचन और पुरुष होते हैं। विशेषण के मुख्यतः निम्नलिखित रुपान्तर होते हैं :—

(क) अकारान्त विशेषण का रूप सदा-श्यों का त्यों रहता है। जैसे--लाल गाय, लाल घोड़ा।

(ख) अकारान्त विशेषण का रूप स्त्रीलिंग में ईकारान्त हो जाता है। जैसे– काला हाथी, काली बकरी।

(ग) तत्सम के अकारान्त गुणवाचक विशेषण में आ वा ई के योग से वह स्त्रीलिंग बन जाता है। यथा - सुशील सुशीला, सुन्दर--सुन्दरी।

(घ) विशेषण के रूप में मुख्यतः तुलना की दृष्टि से रूपान्तर होता है। तुलनात्मक दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं :—

(१) मूलावस्था (२) उत्तरावस्था

(३) उत्तमावस्था

(क) मूलावस्था :–जिससे विशेषण की सामान्य अवस्था का ज्ञान होता है, उसे मूलावस्था कहते हैं। जैसे--गाय सुन्दर है।

(ख) उत्तरावस्था :- जिस विशेषण से दो विशेष्यों में से किसी एक के गुण की अधिकता या न्यूनता का ज्ञान होता हैं, उसे उत्तरावस्था कहते हैं। जसे :--यह गाय सुन्दरतर है।

(ग) उत्तमावस्था :- जिस विशेषण से अनेक विशेष्यों में से किसी एक के गुण की अधिकता या न्यूनता का ज्ञान होता है, उसे उत्तमावस्था कहते हैं। जैसे--यह गाय सुन्दरतम है।

## अभ्यास

१ विशेषण के कितने भेद होते हैं ? सोदाहरण बतावें।

२ इनका व्यवहार अपने वाक्य में करें :--
द्वितीय, काला, निपुण, थोड़ा और सच्चा
३ विशेष्य और विशेषण में क्या अन्तर है ?
४ विशेषण की कितनी अवस्थायें हैं ? उदाहरण दें ।

## क्रिया

क्रिया का अर्थ ही करना होता है। अतः रमण पढ़ता है। श्याम दौड़ता है। इन वाक्यों को देखने से पता चलता है कि रमण कौन काम करता है ? अर्थात् वह पढ़ने का काम करता है। उसी तरह से श्याम दौड़ने का काम करता है। पूर्व में ही हमलोग क्रिया की परिभाषा से अवगत हो चुके हैं। अब हमलोग उसके भेदों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करेंगे। क्रिया के मुख्य दो भेद होते हैं।

[१] अकर्मक क्रिया [२] सकर्मक क्रिया

(क) अकर्मक क्रिया : -जिस क्रिया से उसका फल कर्त्ता पर ही पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे :--कृष्ण दौड़ता हैं। सोहन सोता है।

इन वाक्यों पर ध्यान देने से पता चलता है कि दोनों वाक्यों में क्रिया का फल कृष्ण एवं सोहन पर ही पड़ता है। इसमें कृष्ण एवं सोहन दोनों हीं कर्त्ता हैं। अतः इसे अकर्मक क्रिया कहेंगे। उठना, बैठना; हँसना, रोना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

(ख) सकर्मक क्रिया : -जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे :--सुरेश आम खाता है। महेश पढ़ता है।

इन वाक्यों को देखने से पता चलता है कि खाने का
आम पर पड़ता है। उसी तरह से दूसरे वाक्य में भी पढ़ने
फल कर्म पर ही पड़ता है। इसमें कर्म तो लुप्त हैं। कि
पड़ता है से पता चलता है कि महेश कुछ अवश्य पढ़ता
इस तरह से लिखना, देखना आदि सकर्मक क्रियाएँ है।

सकर्मक क्रिया में कर्म रहता है। कभी-कभी कर्म लुप्त
रहता है।

प्रेरणार्थक क्रिया :—जब किसी वाक्य के कर्त्ता
प्रेरित कर उससे कार्य कर वाया जाता है तो उस क्रिया
प्रेरणार्थक क्रिया तथा कर्त्ता को प्रेरक कर्त्ता कहते
जैसे--शिक्षक, छात्र से हिसाब बनबाते हैं।

विधि क्रिया :—जिस क्रिया से आज्ञा का बोध होता
उसे विधि क्रिया कहते हैं। जैसे :--तुम पाठशाला जाओ।

पूर्वकालिक क्रिया :—पहली क्रिया समाप्त कर ज
कर्त्ता दूसरी क्रिया करता है तो पहली क्रिया को पूर्वकालि
क्रिया कहते हैं। इस क्रिया में धातु के बाद प्राय 'कर' प्रत्य
लगा हुआ रहता है। जैसे:- सबक याद कर विद्यालय आओ

## अभ्यास

१ क्रिया के मुख्य कितने भेद हैं ? सोदाहरण बतावें।
२ प्रेरणार्थक, विधि और पूर्वकालिक क्रिया से क्य
समझते हैं ? परिभाषा सहित समझावें।
३ इनका प्रयोग अपने वाक्यों में करें :--
खाकर, लेकर, पढ़ और लिखवाना।

# काल

क्रिया के करने में जो समय लगता है, उसे काल कहते हैं। काल के तीन भेद होते हैं।

(१) भूतकाल (२) वर्त्तमान काल (३) भविष्यत् काल।

[क] भूतकाल : जिस क्रिया से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे—उसने कहा। वह गया।

भूतकाल के छः भेद होते हैं।

(१) सामान्यभूत (२) आसन्नभूत (३) पूर्णभूत (४) अपूर्णभूत
(५) संदिग्धभूत (६) हेतुहेतु मद्भूत।

[क] सामान्यभूत :—जिस क्रिया से भूतकाल की सामान्यता समझी जायें, उसे सामान्यभूत काल क्रिया कहते हैं। जैसे :—राम विद्यालय गया।

[ख] आसन्नभूत :— जिस क्रिया से मालूम हो कि भूतकाल में क्रिया अभी-अभी समाप्त हुई है, उसे आसन्नभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे—मोहन ने पुस्तक पढ़ी है।

[ग] पूर्णभूत :— जिस क्रिया से मालूम पड़े कि क्रिया बहुत पहले ही पूरी हो चुकी है, उसे पूर्णभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे— सोहन ने पढ़ा था।

[ब] अपूर्णभूत :—जिस क्रिया से मालूम हो कि क्रिया भूतकाल में शुरू हुई थी। किन्तु वह समाप्त नहीं हुई थी, उसे अपूर्णभूत काल की क्रिया कहते हैं। जैसे—वह लिखता था।

[ङ] सन्दिग्धभूत :- जिस भूतकालिक क्रिया की पूर्णता में सन्देह हो, उसे सन्दिग्ध भूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे—हरि ने पढ़ा होगा।

[च] हेतुहेतुमद्भूत : जिस भूतकालिक क्रिया में कार्य और कारण का फल भूतकाल में प्रगट हो, उसे हेतुहेतुमद् भूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे--उमेश परिश्रम करता तो वर्ग में प्रथम आता।

## वर्त्तमानकाल

जिस क्रिया से बीत रहे समय का बोध हो, उसे वर्त्तमान काल की क्रिया कहते हैं। जैसे-श्याम पुस्तक पढ़ता है, कृष्णा पाठशाला जा रही है। वर्त्तमान काल के तीन भेद होते हैं :—

(१) सामान्य वर्त्तमान (२) तात्कालिक वर्त्तमान (३) संदिग्ध वर्त्तमान।

(क) सामान्य वर्त्तमान :—जिस क्रिया से वर्त्तमान काल की सामान्यता समझी जाये, उसे सामान्य वर्त्तमान काल की क्रिया कहते हैं। जैसे--राधा पुस्तक पढ़ती है।

(ख) तात्कालिक वर्त्तमान : जिस क्रिया से हो रहे कार्य का अर्थ प्रगट हो, उसे तात्कालिक वर्त्तमान काल की क्रिया कहते हैं। जैसे--बीणा पुस्तक पढ़ रही है।

(ग) सन्दिग्ध वर्त्तमान :- जिस क्रिया से हो रहें कार्य की पूर्णता में संदेह प्रगट हो, उसे संदिग्ध वर्त्तमान काल की क्रिया कहते हैं। जैसे—दीनेश पुस्तक पढ़ता होगा।

## भविष्यत्काल

जिस क्रिया से आनेवाले समय का ज्ञान हो, उसे भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। जैसे--वह पटना जायेगा। विमला खाना खायेगी।

भविष्यत्काल के दो भेद होते हैं:

(१) सामान्य भविष्यत् (२) सम्भाव्य भविष्यत्

(क) सामान्य भविष्यत् :— जिससे भविष्यत् काल की सामान्यता प्रगट हो उसे सामान्य भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। जैसे—प्रमोद पाठशाला जायेगा।

(ख) सम्भाव्य भविष्यत् :—भविष्यत्काल में यदि किसी कार्य की इच्छा प्रगट हो, उसे सम्भाव्य भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। जैसे—हम पढ़ें। वे खावें।

### अभ्यास

(१) काल किसे कहते हैं तथा उसके कितने भेद हैं।

(२) भूत, वर्त्तमान एवं भविष्यत् काल के भेदों की परिभाषा सोदाहरण दें।

(३) संदिग्ध भूत एवं संदिग्ध वर्त्तमान में क्या अन्तर है?

(४) हेतुहेतुमद्भूत और सम्भाव्य भविष्यत् काल के दो-दो उदाहरण दें।

# रूपावलि

## अकर्मक क्रिया :—(बोल धातु)

### (१) सामान्यभूत

कर्त्ता-पुँलिंग

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोला | हम बोले |
| मध्यम पुरुष | तू बोला | तुम बोले |
| अन्य पुरुष | वह बोला | वे बोले |

### (२) आसन्नभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोला हूँ | हम बोले हैं। |
| मध्यम पुरुष | तू बोला है | तुम बोले हो |
| अन्य पुरुष | वह बोला | वे बोले हैं। |

### (३) पूर्णभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोला था | हम बोले थे |
| मध्यम पुरुष | तू बोला था | तुम बोले थे |
| अन्य पुरुष | वह बोला था | वे बोले थे |

### (४) सन्दिग्धभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोला हूँगा | हम बोले होंगे |
| मध्यम पुरुष | तू बोला होगा | तुम बोले होगे |
| अन्य पुरुष | वह बोला होगा | वे बोले होंगे |

### (५] अपूर्णभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलता था | हम बोलते थे |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| मध्यम पुरुष | तू बोलता था | तुम बोलते थे |
| अन्य पुरुष | वह बोलता था | वे बोलते थे |

### ६ हेतुहेतु मद्भूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलता | हम बोलते |
| मध्यम पुरुष | तू बोलता | तुम बोलते |
| अन्य पुरुष | वह बोलता | वे बोलते |

### १ सामान्य वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलता हूँ | हम बोलते हैं |
| मध्यम पुरुष | तू बोलता है | तुम बोलते हो |
| अन्य पुरुष | वह बोलता है | वे बोलते हैं |

### २ तात्कालिक वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोल रहा हूँ | हम बोल रहे हैं |
| मध्यम पुरुष | तू बोल रहा है | तुम बोल रहे हो |
| अन्य पुरुष | वह बोल रहा है | वे बोल रहे हैं |

### ३ संदिग्ध वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलता हूँगा | हम बोलते होंगे |
| मध्यम पुरुष | तू बोलता होगा | तुम बोलते होगे |
| अन्य पुरुष | वह बोलता होगा | वे बोलते होंगे |

### १ सामान्य भविष्यत्

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलूँगा | हम बोलेंगे |
| मध्यम पुरुष | तू बोलेगा | तुम बोलोगे |
| अन्य पुरुष | वह बोलेगा | वे बोलेंगे |

(२) सम्भाव्य भविष्यत्

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलूँ | हम बोलें |
| मध्यम पुरुष | तू बोले | तुम बोले |
| अन्य पुरुष | वह बोले | वे बोले |

कर्त्ता स्त्रीलिंग

(१) सामान्यभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोली | हम बोली |
| मध्यम पुरुष | तू बोली | तुम बोली |
| अन्य पुरुष | वह बोली | वे बोली |

(२) आसन्नभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोली हूँ | हम बोली हैं |
| मध्यम पुरुष | तू बोली है | तुम बोली है |
| अन्य पुरुष | वह बोली है | वे बोली हैं |

(३) पूर्णभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोली थी | हम बोली थी |
| मध्यम पुरुष | तू बोली थी | तुम बोली थी |
| अन्य पुरुष | वह बोली थी | वे बोली थी |

(४) संदिग्धभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोली हूँगी | हम बोली होंगी |
| मध्यम पुरुष | तू बोली होगी | तुम बोली होंगी |
| अन्य पुरुष | वह बोली होगी | वे बोली होंगी |

(५) अपूर्णभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलती थी | हम बोलती थीं |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| मध्यम पुरुष | तू बोलती थी | तुम बोलती थीं |
| अन्य पुरुष | वह बोलती थी | वे बोलती थीं |

### [६] हेतुहेतु मद्भूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलती | हम बोलतीं |
| मध्यम मुरुष | तू बोलती | तुम बोलतीं |
| अन्य पुरुष | वह बोलती | वे बोलतीं |

### १ सामान्य वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलती हूँ | हम बोलती हैं |
| मध्यम पुरुष | तू बोलती है | तुम बोलती हो |
| अन्य पुरुष | वह बोलती है | वे बोलती हैं |

### २ तात्कालिक वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोल रही हूँ | हम बोल रही हैं |
| मध्यम पुरुष | तू बोल रही है | तुम बोल रही हो |
| अन्य पुरुष | वह बोल रही है | वे बोल रही हैं |

### ३ संदिग्ध वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलती हूँगी | हम बोलती होंगी |
| मध्यम पुरुष | तू बोलती होगी | तुम बोलती होंगी |
| अन्य पुरुष | वह बोलती होगी | वे बोलती होंगी |

### १ सामान्य भविष्यत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलूँगी | हम बोलेंगी |
| मध्यम पुरुष | तू बोलेगी | तुम बोलेंगी |
| अन्य पुरुष | वह बोलेगी | वे बोलेंगी |

### २ सम्भाव्य भविष्यत्

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं बोलूँ | हम बोलें |
| मध्यम पुरुष | तू बोले | तम बोले |
| अन्य पुरुष | वह बोले | वे बोले |

## सकर्मक क्रिया–[पढ़ धातु]

### १ सामान्यभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने पढ़ा | हमने पढ़ा |
| मध्यम पुरुष | तूने पढ़ा | तुमने पढ़ा |
| अन्य पुरुष | उसने पढ़ा | उन्होंने पढ़ा |

### २ आसन्नभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने पढ़ा है | हमने पढ़ा है |
| मध्यम पुरुष | तूने पढ़ा है | तुमने पढ़ा है |
| अन्य पुरुष | उसने पढ़ा है | उन्होंने पढ़ा है |

### ३ पूर्णभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैंने पढ़ा था | हमने पढ़ा था |
| मध्यम पुरुष | तूने पढ़ा था | तुमने पढ़ा था |
| अन्य पुरुष | उसने पढ़ा था | उन्होंने पढ़ा था |

### ४ अपूर्णभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | मैं पढ़ता था | हम पढ़ते थे |
| मध्यम पुरुष | तू पढ़ता था | तुम पढ़ते थे |
| अन्य पुरुष | वह पढ़ता था | वे पढ़ते थे |

### ५ संदिग्धभूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | --मैंने पढ़ा होगा | -हमने पढ़ा होगा |
| मध्यम पुरुष | --तूने पढा होगा | --तुमने पढ़ा होगा |
| अन्य पुरुष | --उसने पढ़ा होगा | --उन्होंने पढ़ा होगा |

### ६ हेतुहेतुमद्भूत

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | --मैं पढ़ता | --हम पढ़ते |
| मध्यम पुरुष | --तू पढ़ता | --तुम पढ़ते |
| अन्य पुरुष | --वह पढ़ता | --वे पढ़ता |

### १ सामान्य वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | --मैं पढता हूँ | --हम पढ़ते हैं |
| मध्यम पुरुष | तू पढ़ता है | --तुम पढ़ते हो |
| अन्य पुरुष | --वह पढ़ता है | —वे पढ़ते हैं। |

### २ तात्कालिक वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | --मैं पढ़ रहा हूँ | --हम पढ़ रहे हैं |
| मध्यम पुरुष | --तू पढ़ रहा है | --तुम पढ़ रहे हो |
| अन्य पुरुष | —वह पढ़रहा है | --वे पढ़ रहे हैं |

### ३ संदिग्ध वर्त्तमान

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | --मैं पढ़ता होगा | —हम पढ़ते होंगे |
| मध्यम पुरुष | --तू पढ़ता होगा | --तुम पढ़ते होगे |
| अन्य पुरुष | --वह पढ़ता होगा | --वे पढ़ते होंगे |

### १ सामान्य भविष्यत्

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | --मैं पढ़ूँगा | - हम पढ़ेंगे |

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| मध्यम पुरुष | -- तू पढ़ेगा | --तुम पढ़ोगे |
| अन्य पुरुष | -- वह पढ़ेगा | -- वे पढ़ेंगे । |

२ सम्भाव्य भविष्यत्

| | | |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष | —मैं पढ़ूँ | -हम पढ़े |
| मध्यम पुरुष | --तू पढ़े | --तुम पढ़े |
| अन्य पुरुष | - वह पढ़े | --वे पढ़े |

नोट :—इसी प्रकार अन्य धातु का भी रूप जाना जा सकता है।

## वाच्य

जिससे क्रिया का फल कर्त्ता, कर्म अथवा भाव पर पड़ता है, क्रिया के उस रूपान्तर को वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं।

१ कर्त्तृवाच्य २ कर्मवाच्य ३ भाववाच्य

(क) कर्त्तृवाच्य : -जिस वाक्य में लिंग और वचन का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होता है, उसे कर्त्तृवाच्य कहते हैं। जैसे--सीता पुस्तक पढ़ती है।

(ख) कर्मवाच्य : जिस वाक्य में लिंग और वचन का प्रयोग कर्म के अनुसार होता है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। जैसे--सीता ने पुस्तक पढ़ी।

(ग) भाववाच्य :--जिस वाक्य में लिंग और वचन का प्रयोग पुलिंग, एकवचन और अन्य पुरुष में हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। जैसे-- सीता ने पुस्तक को पढ़ा।

अभ्यास

(१) वाच्य किसे कहते हैं तथा उसके कितने भेद हैं ?
(२) वाच्य के भेदों की परिभाषा सोदाहरण लिखें।

## अव्यय

अव्यय के विषय में पूर्व में ही चर्चा हो चुकी है कि जिस शब्द का रूप सदा ज्यों का त्यों बना रहता है, उसे अव्यय कहते हैं। अब हमलोग अव्यय के भेदों के विषय में विचार करेंगे। अव्यय के मुख्य चार भेद होते हैं :-

[१] क्रिया विशेषण अव्यय
[२] सम्बन्धसूचक अव्यय
[३] समुच्चबोधक अव्यय
[४] विस्मयादिबोधक अव्यय

(क) क्रिया---विशेषण अव्यय : जिन अव्ययी शब्दों से क्रिया की विशेषता (स्थान, काल, परिणाम एव रीति) का भाव प्रगट हो, उसे क्रिया-विशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे--

रामनाथ धीरे-धीरे पढ़ता है।

प्रमोद इधर हीं आता है।

इन वाक्यों में धीरे-धीरे तथा इधर शब्द अव्यय हैं। प्रथम वाक्य में पढ़ता है तथा दूसरे में आता है क्रिया है। धीरे-धीरे तथा इधर हीं क्रिया की विशेषता बतलाता है। क्योंकि धीरे-धीरे पढ़ने का तथा इधर हीं आने की विशेषता बतलाता है।

## प्रयोगानुसार क्रिया विशेषण के भेद

प्रयोगानुसार क्रिया विशेषण के तीन भेद होते हैं।

(१) साधारण (२) संयोजक (३) अनुबद्ध

साधारण :—जिस क्रियाविशेषण का प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य में किया जाता है उसे साधारण क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे कहाँ, अब, तब, जल्द आदि।

संयोजक :—जो दो उपवाक्यों को आपस में मिलाता है तथा उसका सम्बन्ध बताता है, उसे संयोजक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे जहाँ तुम गये थे वहीं मैं भी था। इसमें जहाँ और वहीं संयोजक क्रियाविशेषण है।

अनुबद्ध .—अनुबद्ध करने के लिए किसी शब्द के साथ आनेवाले क्रिया बिशेषण को अनुबद्ध क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे तो, तक, भी आदि।

## रुपानुसार क्रिया विशेषण के भेद

रुपानुसार क्रिया विशेषण के तीन भेद होते हैं।

(१) मूल क्रिया विशेषण (२) यौगिक क्रिया विशेषण (३) संयुक्त क्रियाविशेषण।

मूल क्रिया विशेषण :— किसी दूसरे के संयोग से बनने वाले क्रियाविशेषण को मूल क्रियाविशेषण कहते हैं।

यौगिक क्रिया विशेषण:—प्रत्यय जोड़ने से बननेवाले क्रियाविशेषण को यौगिक क्रियाविशेषण कहते हैं।

जैसे--जहाँ, पर, सबेरे, अभी आदि।

संयुक्त क्रियाविशेषण :—दो या उससे अधिक शब्दों को जोड़ने से बननेवाले क्रियाविशेषण को सयुक्त क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे—शीघ्रातिशीघ्र, दिन भर, प्रतिदिन, घर-घर, रातोरात आदि।

अभ्यास

१ क्रियाविशेषण किसे कहते हैं ?
२ अव्ययी क्रियाविशेषण के कितने भेद होते हैं ?
३ प्रयोगानुसार क्रियाविशेषण के कितने भेद होते हैं ?
४ रूपानुसार क्रियाविशेषण के कितने भेद हैं ?
५ विभिन्न शब्दों के अनुसार क्रियाविशेषण के भेदों का दो-दो उदाहरण दें।

## समास

जब दो या दो से अधिक शब्द अपनी विभक्तियों अथवा अन्य योजक शब्दों को छोड़कर आपस में मिलकर नया शब्द बनाते हैं तो उसे हम समास कहते हैं।

जैसे :—
राजपुत्र = राजा का पुत्र
चन्द्रमुखी = चन्द्र के समान मुखवाली
सीताराम = सीता और राम

सामासिक शब्द :—समास द्वारा बने हुए नये शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं।

विग्रह :—सामासिक शब्दों के प्रत्येक खण्ड को अलग-अलग करने का नाम विग्रह है।

ऊपर दिये गये उदाहरणों को देखने से पता चलता है कि

प्रत्येक में दो-दो शब्द हैं तथा दोनों के मध्य क्रमशः का, के समान तथा और विभक्तियाँ एव योजक शब्द हैं। अतः इन सब का लोप कर देने के बाद राजपुत्र, चन्द्रमुखी तथा सीताराम सामासिक शब्द बन गये हैं। इसीं आपसी मेल को समास कहते हैं।

समास के भेद :-

समास के छः भेद होते हैं।

(१) तत्पुरूष (२) कर्मधारय (३) द्विगु (४) द्वन्द्व (५) बहुव्रीहि (६) अव्ययीभाव

तत्पुरुष :-जिस सामासिक शब्द का द्वितीय खण्ड प्रधान हो, उसे तत्पुरूष समास कहते हैं। जैसे :--राजपुत्र। राजपुत्र का विग्रह होगा राजा का पुत्र। इसमें द्वितीय खण्ड पुत्र की हीं प्रधानता है। अतः राजपुत्र को तत्पुरूष समास कहते हैं।

कर्मधारय :--जिस सामासिक शब्द से विशेषण और विशेष्य का वोध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे :--चन्द्रमुखी। चन्द्रमुखी का विग्रह होगा चन्द्र के समान मुखवाली। अर्थात् चन्द्रमा सी मुखवाली। इसमें विशेषण चन्द्र है तथा मुखी विशेष्य। अतः इसे कर्मधारय समास कहते हैं।

द्विगु :-जिस सामासिक शब्द का प्रथम खण्ड संख्या वाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे :--त्रिभुज। इसका विग्रह करने पर तीन भुजा वाला होगा। क्योंकि 'त्रि'

का अर्थ होगा तीन तथा 'भुज' का अर्थ होगा भुजा अर्थात् तीन भुजा वाला। इसमें प्रथम खण्ड संख्या बोधक है। अतः इसे द्विगु समास कहते हैं।

द्वन्द्व —जिन सामासिक शब्द का दोनों खण्ड प्रधान हो, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे:--सीताराम। इसका विग्रह करने पर सीता और राम होगा। इसमें सीता और राम दोनों खण्ड प्रधान हैं। अत इसे द्वन्द्व समास कहते हैं।

बहुव्रीहि :---जो सामासिक शब्द अपने साधारण अर्थ को छोड़ कर विशेष अर्थ धारण करता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। जैसे:-- चतुर्भुज चतुर्भुज का विग्रह करने पर 'चार भुजा वाला है जो' होगा। अर्थात् चार भुजा वाले किसी भी व्यक्ति को हम चतुर्भुज कह सकते हैं। किन्तु चतुर्भुज का विशेष अर्थ होता है, विष्णु भगवान। अतः इसे हम बहुव्रीहि समास कहते हैं।

अव्ययीभाव :--जिस सामासिक शब्दों से अव्यय का ज्ञान होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे :--यथासाध्य। इसमें यथा शब्द अव्यय है। अतः इस अव्ययीभाव समास कहते हैं।

सन्धि और समास में अन्तर :---

अक्षरों के मेल को संधि तथा शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

अभ्यास

१ समास किसे कहते हैं।

३ सन्धि और समास में क्या अन्तर है ?
२ सामासिक शब्द किसे कहते हैं ?
१ समास के कितने भेद होते हैं ?
४ बहुव्रीहि समास किसे कहते हैं ?
५ अपनी याद से प्रत्येक समास के उदाहरण दें।
६

## वाक्य-प्रकरण

मोहन आम खाता है। सीता पाठशाला जाती है।
लाल घोड़ा आता है। गाय दूध देती है।

ऊपर के वाक्यों में यदि प्रत्येक शब्द को अलग-अलग कर दें, जैसे--मोहन, सीता, पाठशाला, लाल, घोड़ा, गाय, दूध आदि तो कहने का अभिप्राय साफ-साफ समझ में नहीं आता। किन्तु, मोहन आम खाता है, कहने से मोहन के बारे में स्पष्ट जाहिर होता है कि वह आम खाने का काम करता है। अतः वाक्य के विषय में हमलोग इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शब्दों के मेल से वाक्य बनता है, जिससे कहने वाले का अभिप्राय साफ-साफ समझ में आ जाता है।

### अभ्यास

१ पुस्तक, हाथी, लाल एवं बालक शब्दों से तीन-तीन वाक्य बनावें।

२ नीचे लिखे वाक्यों में उचित शब्द देकर वाक्य की पूर्ति करें :--

(क) श्याम ..... पढ़ता है। (ख) ..... आम खाता है। (ग) लाल घोड़ा ..... है।

## वाक्यांग

वाक्य के दो अंग होते हैं।

१ उद्देश्य २ विधेय

सोहन पढ़ता है। श्याम खेलता है।

इन वाक्यों में सोहन तथा श्याम के विषय में कुछ कहा गया है। दोनों हीं वाक्यों में सोहन एव श्याम के कार्य के विषय में कहा गया है। क्योंकि सोहन क्या करता है? पढ़ने का काम। उसी तरह से श्याम क्या करता है? खेलने का काम। अतः जिसके विषय में कुछ कहा जाये उसे उद्देश्य कहते हैं।

उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाये, उसे विधेय कहते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में सोहन तथा श्याम उद्देश्य हैं। 'पढ़ता है' और 'खेलता है' विधेय हैं।

### अभ्यास

१ वाक्य के कितने अंग होते हैं? उनके नाम बतावें।
२ उद्देश्य एवं विधेय से क्या समझते हैं?

## वाक्यांग--विस्तार

### उद्देश्य का विस्तार :—

काली गाय चरती है। लड़का सुशील है।

इन वाक्यों में गाय के रंग तथा लड़के के स्वभाव के विषय में बताया गया है। गाय कैसी है? काली तथा लड़के का स्वभाव कैसा है? सुशील। अतः उन वाक्यों में गाय एवं लड़का

उद्देश्य है और काली तथा सुशील उद्देश्य की विशेषता बताने वाले शब्द है। जो शब्द उद्देश्य की विशेषता बताता है, उसे उद्देश्य का विस्तार कहते हैं।

अभ्यास

१ उद्देश्य का विस्तार किसे कहते हैं ?

२ नीचे लिखे शब्दों से वाक्य बनावें :-

अच्छा, पीला, सुन्दर।

विधेय का विस्तार

दीनेश धीरे-धीरे खाता है। अवधेश तेजी से पढ़ता है।

इन वाक्य से पता चलता है कि खाने तथा पढ़ने की क्रिया क्रमशः धीरे-धीरे तथा तेजी से होती है। दोनों वाक्यों में खाता है और पढ़ता है, विधेय कहते है। किन्तु, धीरे-धीरे एवं तेजी से विधेय की विशेषता बतलाती हैं। विधेय की विशेषता बतलाने वाले शब्द को विधेय का विस्तार कहते हैं।

अभ्यास

१ विधेय का विस्तार किसे कहते हैं ?

२ विधेय के विस्तार से संबंधित तीन वाक्य बनावें।

वाक्य भेद

स्वरुपानुसार वाक्य तीन तरह के होते हैं।

(१) साधारण वाक्य (२) मिश्र वाक्य (३) संयुक्त वाक्य

साधारण वाक्य :- साधारण वाक्य को अमिश्र

वाक्य भी कहते हैं। अमिश्र का अर्थ बिना मिला हुआ होता है। क्योंकि अमिश्र को खण्ड करने पर अ और मिश्र होगा। अ का मानी नहीं तथा मिश्र का मानी मिला हुआ होता है। अर्थात् साधारण वाक्य। अतः हम कह सकते हैं कि जिस वाक्य मे एक उद्देश्य हो तथा उसके विषय में एक ही बात कही गयी हो, उसे साधारण वाक्य कहते हैं।
जैसे—गीता पुस्तक पढ़ती।

मिश्र वाक्य :—जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य तथा उस पर अवलम्बित एक या कई अंग वाक्य रहते हैं तो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।

जैसे —वे किसान जो परिश्रम करते हैं, खूब फसल उपजाते है।

इसमें वे किसान खूब फसल उपजाते है। प्रधान वाक्य है तथा जो परिश्रम करते हैं। अवलम्बित या आश्रित वाक्य है।

संयुक्त वाक्य : जिस वाक्य में दो या दो से अधिक साधारण या मिश्र वाक्य रहते है उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे—शीला खाती है और विद्या पढ़ती है। काम करना हो तो खूब काम करो और आराम करना हो तो आराम करो।

इसमें प्रथम वाक्य में दो साधारण वाक्य हैं तथा दूसरे में दो मिश्र वाक्य हैं। अतः इसे संयुक्त वाक्य कहेंगे।

## अभ्यास

१ स्वरूपानुसार वाक्य के कितने भेद हैं।
२ वाक्य के भेदों के तीन-तीन उदाहरण दें।

# उपसर्ग

जो किसी शब्द के आदि में मिलकर, उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उसे उपसर्ग कहते हैं। नीचे उदाहरण दिये जाते हैं।

१ अ—(निषेद) अज्ञान, अपवित्र, अनाथ, अकारण आदि

२ अन--(निषेद)--अनभिज्ञ, अनादि, अनेक, अनिष्ट आदि

३ अति—(अधिक)-अत्याचार, अभ्युक्ति, अत्यन्त, अतिरिक्त अतिवृष्टि आदि

४ अधि -(श्रेष्ठता बोधक) -अधिष्ठाता, अधिपति, अधिकार, अधिराज, अधिनायक आदि

५ अनु--(पीछे, समान)-अनुज, अनुचर, अनुगामी, अनुरुप, अनुसार आदि।

६ अप—(अभाव, हीन)—अपमान, अपयश, अपकार अपराध, अपभ्रंश आदि।

७ अपि--(निश्चयार्थक)--अपिधान

८ अभि—(सामने, समीप)-अभिमान, अभिप्राय, अभिलाषा अभ्युत्थान, अभिनव आदि।

९ अव--(हीन, अभाव -अवसान, अवरोध, अवशेष, अवगत, अवगुण, अवतार आदि।

१० आ (विरोध, और, समेत)--आमुख, आभूषण, आक्रमण, आचरण, आकर्षण आदि।

११ उत् (श्रेष्ठ, ऊँचा) उत्सर्ग, उत्साह, उत्कंठा, उत्कर्ष, उत्पत्ति आदि।

१२ उप (निकटता बोधक)—उपयोग, उपनाम, उपकार, उपमान, उपदेश आदि।

१३ कु ( बुरासूचक )—कुप्रवृति, कुपुत्र, कुरीति, कुकर्म, कुफल, कुजात आदि।

१४ निर ( निषेध द्योतक )—निर्लोभ, निर्भीक, निर्जन, निर्बल, निरपराध, निर्विकार आदि।

१५ प्र (अधिकता सूचक)— प्रबल, प्रलाप, प्रलय, प्रताप, प्रदीप, प्रवीर, प्रवीण आदि।

१६ परा (विपरीतार्थक)—पराक्रम, पराजय, पराश्रय, पराभव, पराधीन आदि।

१७ प्रा— प्राचीन, प्राकलन, प्रांगण।

१८ परि निकटताबोधक )— परिणाम, परिमाण, परिश्रम, परिवर्त्तन, परिक्रमा आदि।

१९ प्रति (विपरीत)— प्रतिध्वनि, प्रतिमूर्ति, प्रतिकूल, प्रतिक्षण, प्रतिनिधि, प्रतिदिन आदि।

२० दुर (बुरा)—दुर्जन, दुर्दिन, दुर्दशा, दुर्लभ, दुर्भिक्ष आदि।

२१ वि ( विशेष, भिन्न )—विदेश, विभाग, विवाह, विनय, विकार, विज्ञान आदि।

२२ सम् ( अच्छा )—सम्यक, संदेश, संजय, संयोग, सन्यास आदि।

२३ सु ( सुन्दरता बोधक )—स्वागत, सुपुत्र, सुफल, सुकर्म, सुलभ, सुवास, सुयश आदि।

२४ उद् ( श्रेष्ठ, ऊपर )—उद्यम, उद्गम, उदय आदि।

२५ स ( सहित —सफल, सजातीय, सबेरा, सहेली, सकुशल, सकल आदि ।

२६ स्व ( अपना —स्वतन्त्र, स्वभाव, स्वराज्य, स्वाभिमान, स्वजातीय आदि ।

प्रत्यय :—जो किसी शब्द के अन्त में जोड़े जाने पर उसके अर्थ और व्यवस्था में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय का अपना कुछ अर्थ नहीं होता। किन्तु, जब उसे दूसरे शब्द में जोड़ते हैं तो उस शब्द का अर्थ बदल जाता है। यहाँ एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि प्रत्यय सदा शब्द के अन्त में ही जोड़े जाते हैं। नीचे प्रत्यय के उदाहरण दिये जाते हैं :—

१ राम की सुन्दरता देखने योग्य है।

२ आपकी लिखावट अच्छी है।

३ मनुष्य में मनुष्यत्व का गुण होना चाहिए।

४ बुढ़ापा कष्टदायक होता है।

इन वाक्यों के रेखांकित शब्दों में ता, वट, त्व, एवं पा प्रत्यय है। क्योंकि ये क्रमशः सुन्दर, लिखा, मनुष्य एवं बूढ़ा के अन्त में जोड़े गये हैं। इसी प्रकार से अन्य प्रत्ययों का व्यवहार हम अपनी स्वेच्छा से कर सकते हैं।

## तद्धित प्रत्यय

प्रत्यय की चर्चा हमलोग ऊपर कर चुके हैं। तद्धित भी प्रत्यय ही है। अब हमलोग तद्धित प्रत्यय पर विचार करेंगे। जगदीश शारीरिक परिश्रम करता है।

उपर्युक्त वाक्य पर ध्यान देने से पता चलता है कि शरीर शब्द संज्ञा है, उसमें इक प्रत्यय जोड़ने से शारीरिक शब्द बन गया है। अतः हमलोग इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय शब्दों के अन्त में जोड़ा जाने वाला प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाता है। तद्धित प्रत्यय के जोड़ने से जो शब्द बनता है, उसे तद्धितान्त कहते हैं। वद्धितान्त मुख्यतः छः प्रकार से बनते हैं। अपत्यवाचक, गुणवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, कर्तृवाचक, अव्ययवाचक।

(क) अपत्यवाचक :—यह नामवाचक संज्ञा से बनता है। अपत्य शब्द से सन्तान तथा समाज का बोध होता है। यथा— यदु - यादव, पाण्डु पाण्डव, कुन्ती --कौन्तेय, मास- मासिक, धर्म --धार्मिक आदि।

(ख) गुणवाचक :—इससे संज्ञा के गुण अथवा विशेषता का बोध होता है। यथा--भारत- भारती, हिन्दुस्तान— हिन्दुस्तानी, ज्ञान -ज्ञानी, वीर--वीरवान, विदेश -विदेशी, देश -देशी आदि।

(ग) भाववाचक :--इससे संज्ञा अथवा विशेषण के भाव का बोध होता है। जैसे-- चौड़ा-चौड़ाई, बुढ़ा-बुढ़ापा, लड़का लड़कपन, लम्बा लम्बाई आदि।

(घ) ऊनवाचक : -इससे लघुता या छोटापन का बोध होता है। जैसे--कटोरा--कटोरी, खाट खटिया, बाँस- बाँसुरी, बच्चा-- बचवा आदि।

(ङ) कर्त्तृवाचक :- इससे किसी वस्तु के करनेवाले का होता है। जैसे --सोनार, पुजारी, हलवाहा, पढ़नेवाला आदि।

(ख) अव्ययवाचक —यह संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय से बनता है। साथ हीं यह स्वयं अव्यय होता है। जैसे—दिनभर, रातभर, कोसभर, जहाँ, तहाँ, कब, कितना, जितना आदि।

## कृदन्त

प्रत्यय के सम्बन्ध में हमलोग पहले हीं विचार कर चुके कि यह शब्द के अन्त में जोड़ा जाता है। प्रत्यय धातु के अन्त में भी जोड़ा जाता है। अस्तु, धातु के अन्त में जोड़े जानेवाले प्रत्यय को कृत प्रत्यय कहते हैं। और इससे बने हुए शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

कृदन्त शब्द मुख्यतः पाँच प्रकार के होते हैं :—(१) कर्त्तृवाचक (२) कर्मवाचक (३) भाववाचक (४) करणवाचक (५) क्रियाद्योतक।

(क) कर्त्तृवाचक :—जिससे कर्त्तापन का अर्थ मालूम होता है, उसे कर्त्तृवाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे—पढ़नेवाला, चलनेवाला, करनेवाला आदि।

(ख) कर्मवाचक :—जिससे कर्मत्व का ज्ञान होता है, जैसे—गाना, खाना, बजाना, ओढ़ना आदि।

(ग) भाववाचक :- जिससे संज्ञा का भाव प्रगट होता है, उसे भाववाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे- खुजलाहट, चिल्लाहट, बनावट आदि।

(घ) करणवाचक :—जिससे कर्त्ता क्रिया को करता है, उसे करणवाचक कृदन्त कहते हैं। जैसे-ढकना, फाँसी, कसौटी।

(ङ) क्रियाद्योतक :—एक कार्य के जारी रहने पर ही कर्त्ता दूसरा कार्य प्रारम्भ कर देता है तो पहले काय को क्रिया-द्योतक कहते हैं। जैसे— गाँधी जी मरकर भी अमर हैं। वह क्रुद्ध होकर बोला। वह खाते-खाते मर गया।

## अभ्यास

१ उपसर्ग तथा प्रत्यय में क्या अन्तर है? सोदाहरण बतलावें।
२ तद्धित एव कृदन्त से आप क्या समझते हैं?
३ तद्धित एवं कृदन्त के भेदों को सोदाहरण बतलावें।

## पद-परिचय

पद-परिचय में शब्दों के प्रकार, वचन, लिंग, पुरुष, कारक और शब्दों का सम्बन्ध आदि का ज्ञान होता है।

रमेश कहता है कि कल्ह मैं पटना जाऊँगा।

निम्नलिखित रूप में उपर्युक्त वाक्या का पद-परिचय करेंगे :—

रमेश :—संज्ञा, व्यक्तिवाचक. एकवचन, पुल्लिग, अन्यपुरुष; कहता है, क्रिया का कर्त्ता।

कहता है :—क्रिया, सकर्मक, सामान्य वर्त्तमान, पुल्लिग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्त्तृवाच्य, इसका कर्त्ता रमेश और कर्म 'मैं पटना जाऊँगा'।

कि :—समुच्चयबोधक अव्यय

कल्ह :—कालवाचक अव्यय

मैं :—सर्वनाम, पुरुषवाचक, पुल्लिग, एकवचन, उत्तमपुरुष,

जाऊँगा क्रिया का कर्त्ता, रमेश के बदले में आया है।

पढना :—संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिग, एकवचन, अन्यपुरुष, जाऊँगा क्रिया का कर्म।

जाऊँगा :—क्रिया, अकर्मक, सामान्य भविष्यत्, पुल्लिग, एकवचन, उत्तमपुरुष, कर्त्तृवाच्य, इसका कर्त्ता मैं और कर्म पढना।

अभ्यास

(१) इनका पद-परिचय दें :—

(क) सीता ने भात खाया।

(ख) राम और श्याम धीरे-धीरे घर आता है।

## चिन्ह विचार

चिन्ह विचार में विरामों के आकार एवं उनके प्रयोगों के नियम पर विचार करते हैं। वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करने हेतु जगह-जगह ठहराव की आवश्यकता होती है। इसी ठहराव को विराम कहते हैं। साथ ही हर्ष, विस्मय, आश्चर्य एवं प्रश्न आदि का बोध इन्हीं विराम चिन्हों से प्रगट करते हैं ऐसे तो विराम चिन्हों की सख्या अधिक हैं। किन्तु, हमलोग यहाँ पर निम्नलिखित विराम चिन्हों पर हीं विचार करेंगे।

(१) अविराम (२) अर्द्ध विराम (३) पूर्ण विराम (४) प्रश्नवाचक चिन्ह (५) विस्मयादि बोधक।

(क) अल्पविराम :—( , )

वाक्य में पढ़ते या लिखते समय सबसे कम समय का

ठहराव होता है, वहीं अल्प विराम के चिन्ह को प्रयोग करते हैं। जैसे—राम, श्याम और मोहन घर जाते हैं।

(ख) अर्द्धविराम :—(;)

जहाँ अल्पविराम से अधिक तथा पूर्णविराम से कम समय और कम ठहराव की आवश्यकता होती है, वहाँ अर्द्धविराम का प्रयोग करते हैं। जैसे—सदा सत्य बोलो; बड़ो की आज्ञा मानो; कृतघ्न बनो।

(ग) पूर्णविराम :—(।)

जब वाक्य का अर्थ पूर्ण रुप से प्रगट होता है तब वहाँ पूर्णविराम चिन्ह का प्रयोग करते हैं। जैसे—

(१) राम की, पूजा घर-घर होती है।

(२) पं० जवाहरलाल नेहरु भारत के प्रधान मंत्री थे।

(घ) प्रश्नवाचक :—(?)

जिस वाक्य में प्रश्न का बोध होता है, उसमें प्रश्नवाचक चिन्ह का प्रयोग करते हैं। जैसे—क्या तुम पटना जाओगे ?

कहाँ से आ रहे हो ?

(ङ) विस्मयादि बोधक :—(!)

जब वाक्य में हर्ष, विस्मय और आश्चर्य आदि का बोध होता है, उसके अंत में विस्मयादि बोधक चिन्ह का व्यवहार करते हैं। जैसे—

वाह ! रमेश परीक्षा में सफल हुआ।

ओह ! महात्मा गाँधीजी मारे गये।

## छन्द विचार

जिसमें छन्द की बनावट के विषय में विचार करते हैं,

उसे छन्द विचार कहते हैं। यह तीन प्रकार का होता है।

(१) मात्रिक (२) वर्णवृत्त (३) लयात्मक

मात्रिक :—जिस छन्द में मात्राओं की संख्या सम तथा वर्णों की संख्या विषमता हो, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं। जैसे -(१) अन्धेरी रात में ऐसा सजीला कौन आया था ?
(२) धनी भी वह अनूठा था, जिधर देखो उधर मोती।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में मात्राओं की सख्या २८-२८ तथा वर्णों की संख्या क्रमशः १६ और १७ हैं। अतः इन्हें हम मात्रिक छन्द कहेंगे।

वर्णवृत्त :—जिस छन्द में वर्णों की सख्या सम तथा मात्राओं की संख्या विषम हो, उसे वर्णवृत्त छन्द कहते हैं। जैसे -(१) कैसे मैं फिरुँगा, मुझे कौन बतलाएगा ?
(२) दूंगा सान्त्वना क्या, मैं तुम्हारी उस माता को।

इन पद्यांशों में वर्णों की संख्या १५-१५ तथा मात्राओं की सख्या क्रमशः २५ और २७ हैं। अतः इन्हें वर्णवृत छन्द कहेंगे।

लयात्मक :—जिस छन्द में मात्राओं तथा वर्णों में से कोई भी सम न हो; किन्तु जो लय पर आधारित हो, उसे लयात्मक छन्द कहते हैं।

जैसे—शान्त स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्वल,
अपलक अनन्त नीरव भूतल।

इन पद्यांशों में मात्राओं की संख्या क्रमशः १४ तथा १३ और वर्णों की संख्या ९ एवं १३ हैं। किन्तु इनमें लय मौजूद है, अतः इन्हें लयात्मक छन्द कहेंगे।

चरण :--मात्रिक तथा वर्णिक दोनों प्रकार के छन्दों में साधारणतया ४-४ भाग होते हैं, जिसे चरण या पाद कहते हैं। इसे एक पँक्ति में लिखते हैं।

दल :--जिस छन्द को दो ही पँक्तियों में लिखा जाता है, उसे दल कहते हैं। इसमें दोहा, सोरठा आदि आते हैं।

मात्रा : किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, उस अवधि को मात्रा कहते हैं। मात्रा दो प्रकार के होते हैं। (१) लघुमात्रा (२) गुरुमात्रा।

लघुमात्रा :--ह्रस्व के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे एक मात्रा अर्थात् लघुमात्रा कहते हैं। जैसे -अ, इ, उ, ऋ आदि।

गुरुमात्रा :--दीर्घ स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे दो मात्राएँ अर्थात् गुरुमात्रा कहते हैं। जैसे--आ, ई, ऊ, ॠ, ऐ, ओ, औ आदि।

मात्रा संकेत :--लघु मात्रा को । से तथा गुरु मात्रा को ऽ से संकेत किया जाता है।

चौपाई :--यह मात्रिक छन्द में आता है। इसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती है। किन्तु इसके अन्त में जगण (।ऽ।) तथा तगण (ऽऽ।) नहीं रक्खे जाते हैं। जैसे--

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता; तव दुख दुखी सु कृपानिकेता।
जनि जननी मानहु जियऊना, तुम्हतें प्रेम राम के दूना॥

दोहा :--यह अर्द्धसम मात्रिक छन्द में आता है इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में १३-१३ और द्वितीय तथा चौथे चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं।

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय॥

सोरठा :—यह छन्द ठीक दोहा के विपरीत होता है। अर्थात् इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में ११-११ और, द्वितीय तथा चौथे चरण में १३-१३ मात्राएँ होती हैं। जैसे—

कपि करि हृदयँ विचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।
जनु असोक अंगार दीन्ह, हरषि उठिकर गहेउ॥

सवैया :—यह २२ अक्षरों से लेकर २६ अक्षरों तक से सवैया बनता है। बड़े छन्दों को सवैया कहते हैं। ऐसे तो यह अनेक प्रकार के होते हैं। यहाँ किरीट सवैया का एक उदाहरण दिया जाता है। जैसे—

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहाँ बसु मेरो चरौं नितनन्द कि धेनु मँझारन॥

यह सवैया २४ अक्षरों से बना है। इसमें ८ भगण अर्थात् ऽ।। × ८ है।

दंडक :- इसके प्रत्येक चरण में २६ अक्षर होते हैं। दंडक भी कई प्रकार के होते हैं। यहाँ मुक्तक दंडक का उदाहरण दिया जाता है। इसे हिन्दी में कवित्त भी कहा जाता है।

अंग-अंग दलित ललित फूले किंसुक से,
हने भट लाखन लषण जातुधान के।

## अलंकार

हमलोग भली-भाँति जानते हैं कि अलंकार का अर्थ आभूषण होता है। आभूषण पहनने से जिस प्रकार शरीर का

अंग-प्रत्यंग चमक उठता है, उसी प्रकार से अलंकार के प्रयोग से काव्य भी चमत्कारपूर्ण बन जाता है। साथ ही पाठकों को इसके पठन-पाठन में मन लगता है तथा उनका हृदय प्रसन्नता से गद्‌गद् हो उठता है। अतः हम कह सकते हैं कि जिसके प्रयोग से काव्य की सुन्दरता बढ़ जाती है, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार दो तरह के होते हैं।

(१) शब्दालंकार (२) अर्थालंकार।

शब्दालंकार :--जिसके प्रयोग से शब्दों की सुन्दरता बढ़ जाती है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

अर्थालंकार :--जिसके प्रयोग से अर्थों अथवा भावों की सुन्दरता बढ़ जाती है उसे अर्थालंकार कहते हैं। शब्दालंकार में मुख्यतः अनुप्रास, यमक, श्लेष, वीप्सा एवं वक्रोक्ति आदि अलंकार आते हैं।

अनुप्रास : जहाँ पर वर्णों की एक या कई बार आवृत्ति हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। जैसे--

रघुनँद आनँदकँद कौसल चँद दशरथ नन्दनं।

यमक :--जहाँ एक ही शब्द की आवृत्ति हो किन्तु उसके अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होते हैं।

कनक कनक ते सौ गुणा, मादकता अधिकाय।
एक खाय बौरात नर एक पाय बौरात॥

श्लेष :--जब एक शब्द का एक अर्थ न होकर कई अर्थ हो तो उसे श्लेषालंकार कहते हैं।

जैसे--चरण धरत शंका करत, भावत नींद न शोर।

सुवरण को ढूढ़त फिरत, कवि व्यभिचारी चोर।

वीप्सा :--क्रोध, शोक आदि मनोवेगों को सूचित करने हेतु किसी शब्द का प्रयोग बार-बार होता है, वहाँ वीप्सालंकार होता है।

जैसे :—हा ! हा ? इन्हें रोकन को टोकत लगावैं।
बिसद विवेक ज्ञान गौरव दुलारे है।।

वक्रोति :--जहाँ वक्ता के अभिप्राय का श्रोता भिन्न अर्थ लगता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे--को तुम हौ ? इत आये कहाँ ?
घनश्याम हौ तो कितहुँ बरसौ।

अर्थालंकार :—अर्थालंकार के भी अनेकानेक भेद होते हैं। किन्तु यहाँ पर हमलोग मुख्य रूप से उपमा, मालोपमा उत्प्रेक्षा एवं ललित अलंकार के विषय में विचार करेंगे।

उपमा :—दो वस्तुओं में विभिन्नता रहने पर भी समानता का वर्णन किया जाता है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। वर्णन में जिसकी प्रधानता हो, उसे उपमेय तथा जिससे समता किया जाये, उसे उपमान कहा जाता है। जैसे
वन्दौं कोमल से जगजननी के पाय।

मालोपमा :—मालोपमा का सन्धि-विच्छेद करने पर माला+उपमा होता है। माला की तरह उपमा हो जहाँ, वहाँ मालोपमा होगा। अर्थात् एक उपमेय को कई उपमानों से तुलना की जाये, उसे मालोपमा अलंकार कहते हैं।
जैसे--इन्द्र जिमि जंभ पर, बाड़व सुअंभ पर,
रावण सदंभ पर रघुकुल राज हैं।

उत्प्रेक्षा :—जहाँ उपमान की संभावना हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे –

लता भवन ते प्रगट भे, तेहि अवसर दोउ भाय।
मनु निकसे युग बिमल विधु, जलद-पटल बिलगाय॥

यहाँ संभावना प्रगट की गयी है कि जिस तरह से बादल को हटाकर चन्द्रमा प्रगट होते हैं, उसी तरह से राम और लक्ष्मण लता भवन से प्रगट हुए।

ललित :—जो बातें कहनी हैं, उसे न कहकर उसके प्रतिबिम्ब का वर्णन किया जाता है, उसे ललित अलंकार कहते हैं। जैसे—

लिखित सुधाकर गा लिखि राहु।
बिधिगति बाम सदा सब काहु॥

## द्वितीय खण्ड—हिन्दी रचना

बच्चे! हिन्दी व्याकरण में अक्षर, शब्द एवं वाक्य के आकार प्रकार तथा उसके प्रयोग आदि नियमों की चर्चा कर चुके हैं। अब हमलोग हिन्दी रचना संबंधी-मुख्य बातों पर विचार करेंगे।

### कर्त्ता के 'ने' चिन्ह का प्रयोग

आसा पूसन् भूत में, क्रिया सकर्मक माहि;
केवल कर्तृवाच्य में, ने हो अन्यत नाहि।

अर्थात्

सकर्मक क्रिया में भूतकाल के सामान्यभूत, आसन्नभूत,

पूर्णभूत एवं संदिग्धभूत काल में कर्तृवाच्य रहने पर कर्त्ता के ने चिन्ह का प्रयोग करते हैं। जैसे--

सामान्यभूत --श्याम ने खाया।
आसन्नभूत --श्याम ने खाया है।
पूर्णभूत --श्याम ने खाया था।
संदिग्धभूत --श्याम ने खाया होगा।

## वाक्य रचना के कुछ मुख्य नियम

१ साधारणतः हिन्दी के वाक्य में पहले कर्त्ता, उसके बाद कर्म तथा अंत में क्रिया का प्रयोग करते हैं। जैसे--मोहन आम खाता है।

२ वाक्य में कर्त्ता का ने चिन्ह नहीं रहने पर क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है। जैसे-- सीता भात खाती है।

३ जब वाक्य में कर्त्ता का ने चिन्ह हो और कर्म लुप्त हो तो क्रिया सदा एकवचन पुँलिंग तथा अन्य पुरुष की होती है। जैसे--सीता ने खाया।

४ जब वाक्य में कर्त्ता 'ने' चिन्हयुक्त हो तथा कर्म का चिन्ह लुप्त हो तो क्रिया कर्मानुसार होगी। जैसे-- सीता ने भात खाया।

५ जब वाक्य में कर्त्ता एवं कर्म दोनों का क्रमशः ने तथा को चिन्ह हो तो क्रिया सदा एकवचन, पुँलिंग तथा अन्य पुरुष की होगी। जैसे--सीता ने रोटी को खाया।

६ जब वाक्य में एक ही लिंग, वचन और पुरुष का कर्त्ता हो तथा कर्म रहित हो तो क्रिया कर्त्ता के लिंगानुसार बहुवचन में होगी। जैसे--सत्येन्द्र और शैलेन्द्र खाते हैं।

मीरा और मालती पाठशाला जाती हैं।

७ जब वाक्य में दोनों लिंगों के कर्त्ता हों तो क्रिया अंतिम कर्त्ता के लिंगानुसार होगी। जैसे—भैंस, घोड़े एवं गायें सड़क पर जाती हैं।

८ एक ही वाक्य में तीनों पुरुषों के कर्त्ता हों तो सर्वप्रथम मध्यम पुरुष, बीच में अन्य पुरुष तथा अन्त में उत्तम पुरुष का प्रयोग करते हैं। साथ ही क्रिया उत्तम पुरुष के अनुसार व्यवहृत होती है। जैसे--तुम, वह और मैं कल्ह पटना चलूँगा।

९ किसी-किसी वाक्य में आदर सूचक के लिए एकवचन के कर्त्ता रहने पर भी क्रिया बहुवचन की होती है। जैसे—चाचाजी कल्ह आने वाले हैं।

१० यदि किसी वाक्य में कई कर्त्ता हों तथा उनके चिन्ह लुप्त हों और उनके मध्य विभाजक शब्द हों तो क्रिया अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होगी। जैसे—बकरे या बकरियाँ आती है।

## कुछ संयोजकों का प्रयोग

### और, तथा, एवं और व

इनका प्रयोग दो प्रधान वाक्यों को मिलाने में किया जाता है। व का प्रयोग अधिकांशतः उर्दू में किया जाता है। और का प्रयोग हिन्दी में अधिक किया जाता है। कई वाक्यों को मिलाने में कई बार और के प्रयोग को बचाने हेतु तथा या एवं का प्रयोग करते हैं। जैसे--राम और श्याम पढ़ते हैं। वह आया और चला गया।

### चूंकि, क्योंकि, इसलिए, अस्तु, अतः

कम से कम दो वाक्यों के रहने पर ही इनका व्यवहार किया जाता है। साथ हीं इनके प्रयोग से मालूम पड़ता है कि प्रथम वाक्य द्वितीय वाक्य का समर्थन करता है।

जैसे—चूँकि मुझे तैयारी नहीं है, मैं परीक्षा नहीं दे सकता हूँ। मैं परीक्षा नहीं दे सकता हूँ, क्योंकि मुझे तैयारी नहीं है। मुझे तैयारी नहीं है, इसलिए परिक्षा देना बेकार है। मुझे तैयारी नहीं है, अतः मैं परिक्षा नहीं देता। अस्तु, अतः, इसलिए का प्रयोग एक हीं अर्थ में होता है।

### अथवा, या, चाहे,

दो या दो से अधिक शब्दों अथवा वाक्यों को समान रूप से विभक्त करने के प्रयोजन से इनका प्रयोग किया जाता है।

या—गाँधी जी ने सन् १९४२ में करो या मरो का नारा-दिया

अथवा—अस्वत्थामा नामक मनुष्य अथवा हाथी मारा गया

चाहे—पुस्तक दो चाहे उसका मूल्य दो।

### पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर

दो वाक्यों के पारस्परिक विरोध को प्रकट करते हैं तथा उन्हें अलग करते हैं। सबों का एक हीं अर्थ में प्रयोग होता है।

जैसे—मैं विद्यालय अवश्य आता, किन्तु बीमार पड़ गया।

कि-यह संयोजक अव्यय है यह दो वाक्यों को जोड़ता है।

जैसे—उसने कहा कि कल्ह हिसाब करूँगा।

### श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

हिन्दी में बहुत से ऐसे शब्द हैं, जिनके उच्चारण प्रायः

सामान मालूम होते हैं, किन्तु अर्थ में भिन्नता होती है। ऐसे श्रुतिसम शब्दों को-श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहते हैं।

उदाहरणार्थ कुछ ऐसे शब्द नीचे दिये जाते हैं।

अंश—भाग
अंस—कन्धा
असन—भोजन
आसन--बैठक
अन्न--अनाज
अन्य--दूसरा
अवधि--समय
अवधी--अवध का
अनल—अग्नि
अनिल--हवा
अधर्म--पाप
अधम--पापी
अभिराम--सुन्दर
अविराम--बिना विश्राम
आवास- रहने की जगह
आभास--संकेत
आदि--प्रथम
आधि- चिन्ता
इति--समाप्ति
ईति --शस्यविघ्न

कर्म--काम
क्रम--सिलसिला
कृत--किया हुआ
क्रीत--खरीदा हुआ
कोष--खजाना
कोख--गर्भाशय
कंकाल--ठठरी
कंगाल--दरिद्र
गृह—घर
ग्रह--नक्षत्र
तरणि--सूर्य
तरुणी--स्त्री
तरणी- नौका
चिर--दीर्घ
चीर- वस्त्र
नीर--पानी
नीड़— घोषला
पवन वायु
पावन -पवित्र
प्रण--प्रतिज्ञा

तरंग —लहर
तुरंग--घोड़ा
दिन--दिवस
दीन--गरीब
दिया--देना क्रिया
दीया--दीपक
द्विप--हाथी
द्वीप--टापू
देव--देवता
दैव--देव सम्बन्धी
वीणा--बाजा
बिना--अभाव में
विधान--नियम
बिहान--सवेरा
बात- वचन
बात--वायु
नगर--शहर
नागर—चतुर मनुष्य
नारी औरत
नाड़ी--नब्ज

उद्धार--छुटकारा
उधार--कर्ज
इतर- दूसरा
इत्र- सुगन्ध
उपल -पत्थर
उत्पल--कमल
कुल--वंश
कूल--किनारा
कान्ति--चमक
क्रान्ति -परिवर्त्तन
शंकर--शिव
संकर--जारज
शुल्क--चन्दा
शुक्ल--उजला
लक्ष--लाख
लक्ष्य--उद्देश्य
सर- देवता
सूर--सूर्य
शूर- वीर

पन--अवस्था
पुरुष--नर
परुष--पराक्रम
पानी--जल
पाणि--हाथ
प्रसाद--अनुग्रह
प्रासाद--भवन
देश--राज्य
द्वेष--दुश्मनी
द्रव--तरल
द्रव्य--वस्तु
सर--तालाब
शर--बाण
सम--बराबर
शम -शान्ति
सब--कुल
शव--लाश
सूची--तालिका
सूचि--सूई
शुचि--पवित्र

बेला--फूल
वेला--समय
भवन -घर
भुवन--संसार
भारती- सरस्वती
भारतीय--भारत का
मूल--जड़
मूल्य--कीमत
मद- घमंड
मद्य--शराब
रंक--गरीब
रंग--वर्ण
वसन--वस्त्र
व्यसन--आदत
समान--बराबर
सामान--वस्तु
सुत--बेटा
सूत--सारथी
नशा--मद्य
निशा--रात

## विपरीतार्थक शब्द

दो शब्द जो आपस में विपरीत अर्थ बतलावे, उसे विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। यथा--

अमृत--विष  अर्थ--अनर्थ  राग--विराग

अधिक--कम
अच्छा--बुरा
अपमान--आदर
आय --व्यय
आदि --अन्त
आगे--पीछे
अन्धकार- प्रकाश
इहलोक--परलोक
एड़ी--चोटी
उदय--अस्त
कठिन -सरल
गुरु -लघु
चंचल--मन्द
जीवन--मरण
जीत--हार
मित्र- शत्रु
मंगल--अमगल
भद्र -अभद्र
भय--निर्भय
मान अपमान
यश- अपयश
आशा--निराशा
अबल- सबल
अनुकूल--प्रतिकूल
अनुराग--विराग
आदान--प्रदान
आस्तिक -नास्तिक
उपकार--अपकार
उन्नति--अवनति
उत्थान--पतन
धनी--निर्धन
नवीन- प्राचीन
नया--पुराना
प्रेम--घृणा
पराया--अपना
पडित--मूख
प्रशंसा--निदा
पाप—पुण्य
मित्र--शत्रु
बली- निर्बल
वाद -विवाद
वाचाल--मूक
राजा--रंक
रात--दिन
लेना--देना
शान्ति--अशांति
शुद्ध--अशुद्ध
सुख--दुख
सोना -जागना
सभव--असंभव
सरस- निरस
सुलभ--दुर्लभ
संयोग--वियोग
सुगन्ध--दुर्गन्ध
स्थावर -जंगम
स्तुति -निन्दा
हिंसा -अहिसा
हाथ--पैर
रोगी- नीरग
विजय--हार
विरक्त- अनुरक्त

## पर्यायवाची शब्द

ईश्वर :--ईश, प्रभु मालिक, भगवान, परमात्मा, परब्रह्म, जगदीश

आकाश :--अम्बर, व्योम, गगन, नभ, अन्तरिक्ष, रखे, अन्नत, आसमान, क्षितिज

समुद्र :--सागर, जलद, जलनिधि, नीरनिधि, पयोनिधि, पयोधि, वारिधि।

हवा :--अनिल, समीर, पवन, वायु, मारुत, आशुग, वात।

पानी :—वारि, नीर, अम्बु, आप, पय, सलिल, अमृत, पानीय, जल।

आग :—अग्नि, पावक, अनल, वन्हि, दहन।

कमल :—जलज, नीरज, अब्ज, उत्पल, सरोज, सरसिज, सरसीरुह।

नदी :--सरिना, तटिनी, तरंगिनी, आपगा।

चन्द्रमा :—चन्द्र, चाँद, हिमांशु, शशि, कलानिधि।

घोड़ा :—अश्व, तुरंग, घोटक, बाजी।

गृह :—गेह, निकेतन, सदन, भवन, मन्दिर।

धरती :—धरित्री, धरा, वसुन्धरा, पृथ्वी, भू, भूमि, वसुमति।

फूल :—कुसुम, प्रसून, पुष्प, सुमन।

भौंरा :--अलि, भ्रमर, मधुकर, मधुप, षट्पद।

आँख :—नेत्र, चक्षु, दृग, नयन, लोचन।

सूर्य :—रवि, दिनकर, दिवाकर, दिनेश, प्रभाकर, भास्कर, भानु, अंशुमाली।

गणेश :—गणपति, गजवदन, गजानन, लम्बोदर, विनायक।

पहाड़ :—गिरि, शैल, अचल, महीधर, गोत्र।

सिंह :- केसरी, केहरी, मृगराज, मृगेन्द्र, हरि, वनराज।

## अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

सिर से पैर तक--आपाद मस्तक

ईश्वर में विश्वास करनेवाला--आस्तिक

ईश्वर में विश्वास नहीं करनेवाला--नास्तिक
अपने पैरों पर खड़ा रहनेवाला -स्वावलम्बी
अपने स्वार्थ में लगा रहनेवाला स्वार्थी
देखने लायक-- दर्शनीय
जिसके बराबर दूसरा न हो--अद्वितीय
जो कर्त्तव्य स्थिर न कर सके -किंकर्त्तव्यविमूढ़
रात में विचरण करनेवाला-- निशाचर
सब कुछ जाननेवाला--सर्वज्ञ
सब कुछ खो देनेवाला--सर्वहारा
किये हुए उपकार को न माननेवाला -कृतघ्न
किये हुए उपकार को माननेवाला--कृतज्ञ
किसी विषय को विशेष जाननेवाला--विशेषज्ञ
जिसका कोई नाथ न हो -अनाथ
जिसका जन्म आगे हुआ हो - अग्रज
जिसका जन्म पीछे हुआ हो - अनुज
परमार्थ करनेवाला - परमार्थी
वह व्यक्ति जो गिरा हुआ है--पतित
चार भुजा वाला- चतुर्भुज
ग्राम में रहनेवाला- ग्रामीण
नगर में रहनेवाला--नागरिक
अधिक बोलनेवाला--वाचाल
जो इस लोक में संभव न हो--अलौकिक
किसकी तुलना नहीं की जा सके--अतुलनीय

जिसकी सीमा हो--सीमित

जिसकी सीमा न हो--असीमित, असीम

## मिडल छात्रवृत्ति परीक्षा १९५६ से १९६४ तक का प्रश्नोत्तर

### सन्धि सम्बन्धी

१९५६ ई० प्रश्न :--संधि और समास के अन्तर सोदाहरण स्पष्ट करें।

उत्तर :--वर्णों के मेल से जो विकार पैदा होता है, उसे सन्धि कहते हैं तथा जब दो या दो से अधिक शब्द अपनी विभक्तियाँ अथवा अन्य योजक शब्दों को छोड़कर आपस में मिलकर नया शब्द बनाते हैं तो उसे समास कहते हैं अर्थात् अक्षरों के मेल को सन्धि तथा शब्दों के मेल को समास कहते हैं। जैसे- रमा+ईश=रमेश

इसमें आ और इ मिलकर ए हो गये हैं। राजपुत्र=राजा का पुत्र।

इसमें का विभक्ति का लोप होकर राजपुत्र नया शब्द बन गया है।

१९५७ ई० प्रश्न :--सन्धि विच्छेद करो :—

उद्धृत, रमेश, तट्टीका, नीरोग, रामायण

उत्तर :--उत्+हृत=उद्धृत रमा+ईश=रमेश

तत्+टीका=तट्टीका निः+रोग=नीरोग

राम+अयण=रामायण

१९५८ ई० प्रश्न :—सन्धि विच्छेद करो।

देवेन्द्र, पवन, कपीश, जगन्नाथ, पावन, निष्कर्ष, नायक, प्रत्येक, जगदीश, दुर्नीति, तद्धित

उत्तर :— देव + इन्द्र = देवेन्द्र  पो + अन = पवन
कपि + ईश = कपीश  जगत् + नाथ = जगन्नाथ
पौ + अन = पावन  निः + कपट = निष्कपट
नै + अक = नायक  प्रति + एक = प्रत्येक
जगत् + ईश = जगदीश  दुः + नीति = दुर्नीति
तत् + हित = तद्धित

१९५९ ई० प्रश्न :— संधि विच्छेद करो :—

पीताम्बर, महोत्सव, जगन्नाथ, रामेश्वर

उत्तर :— पीत + अम्बर = पीताम्बर  महा + उत्सव = महोत्सव
जगत् + नाथ = जगन्नाथ  राम + ईश्वर = रामेश्वर

१९६२ प्रश्न :— संधि विच्छेद करो :—

रमेश, विद्यालय, मनोहर

उत्तर :— रमा + ईश = रमेश  विद्या + आलय = विद्यालय
मनः + हर = मनोहर

१९६३ प्रश्न :— संधि विच्छेद करो :—

विद्यार्थी, स्वागत, सम्वाद, संतोष, निर्गुण

उत्तर :— विद्या + अर्थी = विद्यार्थी  सु + आगत = स्वागत
सम् + वाद = सम्वाद  सम् + तोष = संतोष
निः + गुण = निर्गुण

१९६४ प्रश्न :— संधि विच्छेद करो :—

हिमालय, उल्लास, जगदीश, नीरोग, नायक

उत्तर :—हिम + आलय = हिमालय, उत + लास = उल्लास
जगत् + ईश = जगदीश, निः + रोग = नीरोग
नै + अक = नायक

## छन्द सम्बन्धी

१९५६ ई० प्रश्न :—छन्द कितने प्रकार के होते हैं ? उनमें से चार के नाम और उदाहरण लिखें।

अथवा

सोरठा के लक्षण लिखकर एक उदाहरण लिखें।

उत्तर :- छन्द तीन प्रकार के होते हैं।

(१) मात्रिक (२) वर्णवृत्त (३) लयात्मक

मात्रिक :—जिस छन्द में मात्राओं पर ही विचार किया जाता है, उसे मात्रिक छन्द कहते हैं। जैसे—

पढ़ो भाई विद्या भला कर्म है। करो देश सेवा यही धर्म है।
अगर काम ऐसा न कुछ भी किया। वृथा जन्म दुनियाँ में तुमने लिया।

वर्णवृत्त —जिस छन्द में वर्णों पर विचार किया जाता है, उसे वर्णवृत्त छन्द कहते हैं। जैसे—

चाह नहीं तो वैभव फीका। खेल नहीं तो शैशव फीका।
मान नहीं तो जीवन फीका। रूप नहीं तो यौवन फीका।

लयात्मक :—जिस छन्द में मात्रा एवं वर्णों में से किसी पर भी विचार नहीं किया जाता है। केवल लय पर आधारित होता है, उसे लयात्मक छन्द कहते हैं। जैसे—

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी, अन्तरतम से आई थी।

चार छन्दों के नाम और उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

चौपाई :--यह मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण हैं तथा प्रत्येक चरण में १६-१६ मात्राएँ होती हैं। जैसे--

अब कहु कुसल जाऊँ बलिहारी, अनुज सहित सुख भवन खरारी
कोमल चित्त कृपालु रघुराई, कपि केहि हेतु-धरी निठुराई।

दोहा :--यह भी मात्रिक छन्द है। इसके पहले तथा तीसरे चरण में १३-१३ और द्वितीय तथा चौथे चरण में ११-११ मात्राएँ होती हैं।

जैसे--रघुपति कर संदेश अब. सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयउ भरे विलोचन नीर॥

सोरठा :--यह भी मात्रिक छन्द है। इसके पहले तथा तीसरे चरण में ११-११ और द्वितीय एवं चौथे चरण में १३-१३ मात्राएँ होती हैं। जैसे--उदाहरण नीचे देखें।

सवैया :--यह वर्णवृत्त में आता है। यह २३ से लेकर २६ अक्षरों तक से बनता है। जैसे--

पाहन हौं, तौं वही गिरि को, जु धरयो करि छत्र पुरंदर कारन
जौ खग हौं तौं बसेरौ करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन

उत्तर :--सोरठा मात्रिक छन्द हैं। इसके प्रथम तथा चतुर्थ चरण में ११-१२ और द्वितीय तथा तृतीय चरण में १३-१३ मात्राएँ होती हैं।

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़ै गिरिवर गहन।
जासु कृपा सु दयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन॥

## लिंग सम्बन्धी

१६५६ प्रश्न : वाक्य द्वारा लिंग निर्णय करो :--

मोती, आँसू, चीज, बालू, सन्तान

उत्तर :-- मोती चमकता है
आँखों से आँसू गिरता है।
यह अच्छी चीज है।
बालू मकान के काम में दिया जाता है।
तुम्हें कितनी सन्तान है।

१६६० प्रश्न :--वाक्य द्वारा लिंग निर्णय करो :--
प्यास, ओस, किरण, बुढ़ापा
मुझे प्यास लगी है।
ओस काफी गिरता है।
सूर्य की किरण लाल है।
बुढ़ापा ठीक नहीं होता है।

१६६३ प्रश्न :--वाक्य द्वारा लिंग निर्णय करो :--
याद, राह पानी, दही, भात, शरबत, चिकनाहट, लड़कपन
तुम्हारी याद आ रही है।
सीधी राह चलो।
गंगा का पानी पवित्र होता है।
दही मीठा है।
मैंने भात खाया।
शरबत मीठा होता है।
इसमें अच्छी चिकनाहट है।
तुममें अभी भी लड़कपन लगा हुआ है ?

१६६४ प्रश्न :--वाक्य द्वारा लिंग निर्णय करो :--
सड़क, नहर, सजावट, बुढ़ापा, सनसनाहट, मौसी, लज्जा।

यह सड़क अच्छी है।
यह नहर कहाँ गयी है।
तुम्हारे घर की सजावट अच्छी है।
तुम्हें बुढ़ापा आ गया।
यह सनसनाहट कहाँ से आ रही है।
मोती चमक रहा है।
इतनी लज्जा क्यों करते हो ?

## अन्य प्रश्न

१९५६ ई० प्रश्न :--कृदन्त और तद्धित के भेद सोदाहरण लिखें।

उत्तर :--कृदन्त :--धातु के अन्त में जोड़े जानेवाले प्रत्यय को कृत् प्रत्यय कहते हैं तथा इससे बने हुए शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

जैसे--खानेवाला, गाना, बजाना आदि।

तद्धित :--संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय के अन्त में जोड़ा जानेवाला प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाता है। प्रत्यय ही तद्धित कहलाते हैं।

जैसे - धार्मिक, भारती, सामाजिक आदि।

१९५७--प्रश्न :--विग्रह कर समास बतावें :--

नीलकमल, दाल-भात, पीताम्बर, त्रिभुज, फुलौरी।

नीलकमल = नीं है जो कमल -कर्मधारय

दाल-भात = दाल और भात--द्वन्द्व

पीताम्बर = पीत है जो अम्बर--कर्मधारय

पीताम्बर = पीत है अम्बर जो--बहुव्रीहि

फुलौरी = फुली हुई बरी -कर्मधारय

त्रिभुज=तीन है भुजा जिसकी—द्विगु

१९५९ प्रश्न—(क) कृदन्त और तद्धित के दो-दो उदाहरण दो।

(ख) विग्रह कर समास बतावें :—कार्यान्वित, सर्वोदय, स्वराज्य

उत्तर :—(क) कृदन्त—पढ़नेवाला, लिखनेवाला

तद्धित—शारीरिक, दैनिक

(ख) कार्यान्वित = कार्य की आन्विति—तत्पुरुष

स = सबों का उदय—तत्पुरुष

स्वराज्य=अपना राज्य—कर्मधारय

१९६० ई० प्रश्न :—इनसे विशेषण बनायें :

| | विशेषण |
|---|---|
| (क) कृपा, धन, स्वर्ण | कृपालु, धनी, स्वर्णिम |
| (ख) ढीठ, अपना, थकना | ढीठाई, अपनत्व, थकावट |

वाक्य प्रयोग :—(क) राम बहुत कृपालु थे।

बिड़ला बहुत धनी है।

आज की स्वर्णिम वेला में तुम्हें स्वागत है।

(ख) इतनी ढीठाई मत करो।

अन्त में अपनत्व का ज्ञान हो ही जाता है।

आज मुझे काफी थकावट है।

## प्रारंभिक बोर्ड परीक्षा १९६५ से १९६६ तक का प्रश्नोत्तर

१९६५ ई० प्रश्न :—(५) (क) किन्हीं पाँच से संज्ञा बनाकर वाक्यों में प्रयोग करें।

खेलना, पढ़ना, बोलना, चलना, भूँजना, झूलना, झगड़ना

संज्ञा :—खेल, पढ़ाई, बोली, चाल, भूँजा, झूला, झगड़ा

फुटबॉल एक अच्छा खेल है।
क्या तुम्हारी पढ़ाई समाप्त नहीं हुई है ?
तुम मीठी बोली बोलते हो।
घोड़े की चाल अच्छी है।
बूँट का भूँजा अच्छा होता है।
तुम झूला पर झूलते हो।
झगड़ा नहीं करना चाहिए।

(ख) किन्हीं पाँच का सन्धि विच्छेद करें :—

विद्यालय, महर्षि, इत्यादि, जगन्नाथ, निश्छल, नीरस

विद्या + आलय = विद्यालय  महा + ऋषि = महर्षि
इति + आदि = इत्यादि  जगत् + नाथ = जगन्नाथ
निः + छल = निश्छल  निः + रस = नीरस

१९६६ ई० प्रश्न-(५) (क) किन्हीं पाँच से विशेषण बनाकर वाक्य में प्रयोग करें :—

शरीर, दिन, अन्त, नमक, पेट, घर, भारत

विशेषण :—शारीरिक, दैनिक, अन्तिम, नमकीन, पेटू, घरेलु, भारतीय

तुम्हें प्रचुर शारीरिक बल है।
तुम्हें दैनिक कार्यक्रम पर ध्यान देना चाहिए।

यह मेरी अन्तिम परीक्षा है।

वह खाने में नमकीन है।

तुम पेटू मालूम पड़ते हो।

वह घरेलू काम-काज में प्रवीण है।

हमलोग भारतीय हैं।

(ग) किन्हीं पाँच कारकों का नाम लिखें तथा ऐसे वाक्य बनावें जिसमें सभी का प्रयोग हो।

उत्तर :—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, आपादान।

सोहन ने रमण के लिए आलमारी से पुस्तक निकाल कर अपने हाथ से मदन को दिया।

१९६७ ई० प्रश्न (५) निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करें :—

काला, सूर्य, चकित, वर्ष, अनाज।

उत्तर :—काला हाथी आता है।

सूर्योदय के समय सूर्य का रंग लाल रहता है।

तुम्हें देखकर मैं चकित रह गया।

आज वर्ष का प्रथम दिन है।

अब देश में अनाज कम नहीं होता।

१९६८ ई० प्रश्न :—(५) किन्हीं पाँच सर्वनामों तथा पाँच विशेषणों का प्रयोग अपने वाक्य में करें।

सर्वनाम—वह पटना जायेगा।

तुम कहाँ जाते हो ?

मैं तुम्हें पुस्तक नहीं दे सकता।

आप क्या करते हैं ?

हमलोगों को खूब मन से पढ़ना चाहिए।

विशेषण--शैलेन्द्र अच्छा लड़का है।

उसका स्वभाव सुन्दर है।

वह पढ़ने में तेज है।

वह वर्ग में प्रथम आता है।

वह सच्चा लड़का है।

१९६९ ई० प्रश्न--५ (क) किन्हीं पाँच विशेषणों तथा पाँच क्रिया विशेषणों का प्रयोग अपने वाक्य में करें।

(ख) निम्नलिखित शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द लिखें और उन विपरीतार्थक शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयुक्त करें :--

आशा, रोगी, धनी, मित्र, शान्ति।

उत्तर :-- (क) विशेषणों का प्रयोग १९६८ के प्रश्नोत्तर में देखें।

क्रिया विशेषण का प्रयोग :--

१ दीनेश धीरे-धीरे आता है।

२ वह तेजी से पढ़ता है।

३ दूकान से पुस्तक शीघ्र लाओ।

४ वह मन्द-मन्द मुस्कुराता है।

५ सत्य बोलना धर्म है।

(ख) आशा--निराशा रोगी--नीरोग

धनी--गरीब मित्र--शत्रु

शान्ति--अशान्ति

यह जानकर मुझे काफी निराशा हुई। तुम नीरोग हो।

भारत में गरीबों की संख्या अधिक है।

शत्रु पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

आजकल अशान्ति का वातावरण है।

—: इति :—

राष्ट्र के चप्पा चप्पा में शिक्षा की स्वर्णिक ज्योत्स्ना बिखेर शिक्षा जगत को आलोकित करने वाले राष्ट्र के भावी कर्णधारों के उज्जवल भविष्य निर्माता के समक्ष अपनी लेखनी संचालन में मुझ सा अल्पज्ञ शिक्षक संकोच का अनुभव तो अवश्य ही करता है, क्योंकि न तो मैं अपने को हिंदी का विद्वान मानता हूं तथा न इसमें विद्वता का ही परिचय दिया है। किंतु हिंदी भाषा/भाषी होने के कारण उससे प्रेम तो अवश्य ही है। साथ ही अध्यापन सेवा में कार्यरत रहने के हेतु छात्रों की कठिनाइयों को सन्निकट से परखने का प्रयत्न तो अवश्य ही किया है। बच्चों की मेधा शक्ति को उत्प्रेरित कर उनके बौद्धिक विकास को समुन्नत करने के दृष्टिकोण से अनुभव एवं अल्प ज्ञानों को संगम का मूर्त रूप देकर प्रस्तुत पुस्तक आपके समक्ष विद्यमान किया है।

व्याकरण जैसे गुढ़ विषय पर अनेकानेक बड़ी से बड़ी तथा छोटी से छोटी पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है, फिर भी मैंने अपनी लेखनी चलाकर इस पुस्तक को आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया है। इसमें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त १९५६ से १९६४ तक के मिडिल छात्रवृत्ति के चुनाव एवं १९६५ से १९६६ तक के प्रारंभिक बोर्ड परीक्षाओं मे आई व्याकरण संबंधी सभी प्रश्नों के समुचित उत्तरों का समावेश किया गया है ताकि छात्र इसे सुगमता-पूर्वक ग्राह्य कर सके, इसीलिए इसकी भाषा सरल, सरस एवं बोधगम्य रखी गई है। व्याकरण की दृष्टि से यह पुस्तक उनके लिए थोड़ा-सा भी उपयोगी सिद्ध हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा। आपका सादर धन्यवाद 🙏

-- स्व॰ हरिवल्लभ ना0 सिंह

EBOOK AVAILABLE ON: Google Books